भाग–7

1. तुमसे मैं कभी विलग न होऊँ

पाठ से

मौखिक

1. (क) कवयित्री ने ईश्वर से मन की शांति प्रदान करने की प्रार्थना की है।

   (ख) इस कविता का अन्य शीर्षक–'प्रार्थना' हो सकता है।

   (ग) कवयित्री ने ईश्वर से अपने विचलित मन में प्रेम की बाती जलाकर प्रेम के योग्य बनाने का अनुरोध किया है।

   (घ) यह कविता ईश्वर को संबोधित करके लिखी गई है।

लिखित

(क) प्रभु से कवयित्री ने अशांत मन को शांति प्रदान करने, प्रतिदिन की लालसाओं से बचाने, विचलित मन में प्रेम की बाती जलाने की प्रार्थनाएँ की गई हैं।

(ख) कविता की पंक्तियों 'समस्त भुवन में व्याप्त हो फिर भी' तथा 'नित्य नए रूपों में आकर' में परमात्मा को सर्वव्यापी बताया गया है।

(ग) परमात्मा से मिलन के योग्य बनाने के लिए कवयित्री ने अपने अशांत मन को शांति प्रदान करने, प्रतिदिन की लालसाओं से बचाने तथा विचलित मन में प्रेम की बाती जलाने की प्रार्थना की है।

(घ) मुझसे तुम यूँ मुख न मोड़ो।

2. अहंकार में डूबी हूँ मैं
   मेरा अंतर तुम चमकाओ।
   विपदाओं से विचलित न होऊँ
   इतना मुझको सबल बनाओ।
   कहाँ है मंदिर मेरे घर में

किस परदे में तुम्हें बिठाऊँ।

उपहास करे सारी दुनिया

फिर भी शंकित न हो पाऊँ।

3. (क) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवयित्री की ईश्वर से यह प्रार्थना है कि मेरे अशांत मन को शांति प्रदान करो। मुझे प्रतिदिन की लालसाओं से बचाओ। हे प्रभु! मेरे विचलित मन में प्रेम की बाती (ज्योति) जलाओ और मुझे स्वयं से मिलन के योग्य बनाओ।

(ख) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवयित्री का यह मानना है कि ईश्वर सर्वव्यापी है फिर वह ईश्वर को पहचान नहीं पाई। ईश्वर प्रतिदिन नए रूपों में आते हैं। ईश्वर सबको प्रसन्न और मोहित करने वाले हैं। इसलिए कवयित्री ईश्वर से प्रार्थना करती है कि मेरे हृदय में बस जाओ।

4. (क) (स) (✓) (ख) (स) (✓)

(ग) (अ) (✓)

भाषा से

1. पुस्तकालय = पुस्तक + आलय

महोत्सव = महा + उत्सव

इत्यादि = इति + आदि

स्वागत = सु + आगत

परोपकार = पर + उपकार

दिनेश = दिन + ईश

देवर्षि = देव + ऋषि

पावक = पौ + अक

2. आदरणीय – पुल्लिंग

नौकर – पुल्लिंग

लड़का – पुल्लिंग

सेठ – पुल्लिंग

डिब्बा – पुल्लिंग

नेता – पुल्लिंग

विधुर – पुल्लिंग

माली – पुल्लिंग

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

कवयित्री परमात्मा से अपने अंतर में बस जाने के लिए कह रही हैं।

गहन सोच

कवयित्री ने परमात्मा से अपने मन की शांति की प्रार्थना इसलिए की कवयित्री ने परमात्मा से अपने विचलित मन में प्रेम की बाती जलाकर प्रेम के योग्य बनाने का अनुरोध किया है। इन्होंने परमात्मा के प्रेम में उनसे कभी विलग न होने की कामना भी की है।

2. अनुभव आधारित अधिगम

मैं परमात्मा से नित्य प्रति अपने, अपने परिवार, ईष्ट-मित्र, सगे-संबंधियों की सुख-शांति और तरक्की की प्रार्थना करता हूँ।

3. कला समेकन

जिन छात्र/छात्राओं की गायन कला में रुचि है, वे तुमसे मैं कभी विलग न होऊँ, कविता का सस्वर गान करके अपने कक्षा के हिंदी अध्यापक/अध्यापिका को सुनाएँ तथा दिए गए चित्र का वर्णन 40-45 शब्दों में वर्णन करें।

2. बोध

पाठ से

मौखिक

1. (क) पंडित चंद्रधर एक स्कूल में अध्यापक थे। उन्होंने अध्यापक की नौकरी तो कर ली, पर सदा पछताया करते कि कहाँ आ फँसे।

   (ख) अफसर लोग पंडित चंद्रधर से इसलिए खुश रहते थे क्योंकि वे ठीक समय पर स्कूल जाते थे, देर से घर लौटते थे और मन लगाकर पढ़ाते थे।

(ग) ठाकुर साहब ने डाँटकर एक मुसाफ़िर से ट्रेन की सीट से उठने के लिए कहा।

(घ) मुंशी बैजनाथ की रास्ते में तबियत खराब हो गई।

(ङ) कृपाशंकर पंडित चंद्रधर का पुराना शिष्य था। वह पंडित जी, दारोगा जी, सियाहेनवीस साहब और उनके बाल-बच्चों को अपने घर ले गया।

लिखित

(क) पंडित जी के पड़ोस में हेड कांस्टेबल ठाकुर अतिबल सिंह और तहसील में सियाहेनबीस मुंशी बैजनाथ रहते थे। पंडित जी से अधिक वेतन न होने पर भी उनकी ज़िंदगी सुखमय थी क्योंकि पूरे मोहल्ले में उनका रौब था। वे चार पैसे की चीज़ एक में लाते थे। लकड़ी-ईंधन उन्हें मुफ़्त में मिलता था।

(ख) बस्ती के लोगों का पंडित जी के साथ अच्छा व्यवहार था और वे पंडित जी से संतुष्ट थे। पाठशाला में लड़कों की संख्या बढ़ गई थी और पाठशाला के लड़के भी उन पर जान देते थे। कोई उनके घर आकर पानी भर देता, तो कोई उनकी बकरी के लिए पत्तियाँ तोड़ लाता था।

(ग) मुंशी बैजनाथ, ठाकुर अतिबल सिंह अपने परिवार सहित तथा पंडित चंद्रधर अयोध्या की यात्रा पर गए। उन्होंने अपनी यात्रा सावन के महीने में आरंभ की।

(घ) तीसरा स्टेशन आने पर ठाकुर साहब ने अपने बाल-बच्चों को वहाँ से दूसरे डिब्बे में बैठाया। इधर दोनों मुसाफिरों ने ठाकुर साहब का सामान उठाकर ज़मीन पर फेंक दिया। जब ठाकुर साहब गाड़ी से उतरने लगे तो उन मुसाफिरों ने उन्हें ऐसा धक्का दिया कि बेचारे प्लेटफार्म पर गिर पड़े।

(ङ) अयोध्या पहुँचकर यात्रियों को कहीं ठहरने की जगह नहीं मिली। तब एक साफ़ जगह देखकर बिस्तर बिछाए गए। इतने में बूँदें गिरने लगीं। बिजली चमकने लगी। बच्चे रोने लगे। सभी परेशान

थे कि कहाँ जाएँ। वहाँ पर पंडित जी की सहायता उनके एक पुराने शिष्य कृपाशंकर ने की।

(च) अयोध्या में जब पंडित जी के पुराने शिष्य कृपाशंकर ने पंडित जी समेत सभी अतिथियों को अपने घर ले जाकर सम्मानपूर्वक सत्कार किया तब पंडित जी ने अपने शिक्षक होने का गौरव समझा।

2.

	किसने कहा?	**किससे कहा?**
(क)	पहला मुसाफ़िर	ठाकुर अतिबल सिंह
(ख)	मुंशी बैजनाथ	चोखेलाल
(ग)	पंडित जी	कृपाशंकर
(घ)	पंडित जी	कृपाशंकर
(ङ)	कृपाशंकर	पंडित जी

4. (क) (स) (✓) (ख) (अ) (✓)
(ग) (द) (✓) (घ) (ब) (✓)
(ङ) (स) (✓)

भाषा से

1. र सरकारी नौकरी
प्रार्थना फर्क
चंद्रधर यात्रा
ट्रक ट्रैक्टर

2. छात्र स्वयं करें।

3.

कचहरी	–	अदालत	मुसाफ़िर	–	यात्री
मुफ़्त	–	निशुल्क	तबीयत	–	स्वास्थ्य
खुशामद	–	चापलूसी	मज़बूर	–	लाचार

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

पंडित चंद्रधर (अध्यापक) इसलिए पछताया करते थे। पंडित चंद्रधर एक स्कूल में अध्यापक थे। नौकरी तो कर ली, पर सदा पछताया करते थे कि कहाँ आ फैसे। यदि कहीं और नौकरी करते तो अबतक हाथ में चार पैसे होते, आराम से जीवन व्यतीत होता। यहाँ तो महीने-भर प्रतीक्षा करने के बाद कहीं पंद्रह रुपए देखने को मिलते हैं। वे भी इधर आए, उधर गायब। न खाने का सुख, न पहनने को आराम।

गहन सोच

पंडित चंद्रधर को शिक्षक के पद की महानता का ज्ञान तब हुआ जब वे मुंशी बैजनाथ और ठाकुर अतिबल सिंह के साथ अयोध्या की यात्रा की और उनके पुराने, शिष्य कृपाशंकर ने अपने गुरुजी को पहचान लिया जिसे इंटर पास करने के बाद सरकारी नौकरी मिल गई थी। पंडित चंद्रधर जी को उनके मित्रों सहित अपने घर ले जाकर आवभगत की तभी पंडित जी को आज शिक्षक का गौरव समझा।

2. विषय संवर्धन गतिविधि

छात्र/छात्राएँ प्रेमचंद की अन्य रचनाएँ पढ़ें और इस रचना के साथ तुलनात्मक विश्लेषण करें।

3. अनुभव आधारित अधिगम

छात्र/छात्राएँ स्वयं उत्तर दें।

4. बहुविकल्पीय प्रश्न

(क) (अ) (✓) (ख) (स) (✓)

(ग) (ब) (✓)

3. अपराजिता

पाठ से

मौखिक

1. (क) साधारणतया विपत्ति के क्षणों में मनुष्य विधाता को दोषी ठहराता है।

(ख) लेखिका कार से डॉ. चंद्रा को उतरते देखकर आश्चर्यचकित रह गई।

(ग) श्रीमती शारदा सुब्रह्मण्यम को 'वीर जननी' पुरस्कार अपनी पुत्री के प्रति अदम्य साहस और संघर्ष के लिए दिया गया।

(घ) लेखिका इसलिए चाहती है कि लखनऊ का युवक उनकी पंक्तियाँ पढ़े क्योंकि उसमें डॉ. चंद्रा के धैर्य एवं साहस का वर्णन है।

(ङ) डॉ. चंद्रा की कविताएँ पढ़कर लेखिका की आँखें इसलिए भर आईं क्योंकि उनकी कविता में जीवन की उदासी स्पष्ट हो रही थीं।

लिखित

(क) डॉ. चंद्रा की प्रारंभिक शिक्षा बंगलूरू के प्रसिद्ध माउंट कारमेल स्कूल से हुई। फिर उन्होंने बी.एस.-सी. किया, प्राणीशास्त्र में एम.एस.-सी. में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

(ख) डॉ. चंद्रा ने विज्ञान के अतिरिक्त कविता रचना, कढ़ाई-बुनाई, जर्मन भाषा की जानकार, पाश्चात्य और भारतीय संगीत में समान रुचि जैसी उपलब्धियाँ अर्जित कीं।

(ग) पच्चीस वर्षों तक अपंग डॉ. चंद्रा के साथ उनकी माँ श्रीमती सुब्रह्मण्यम ने जो कठिन साधना की और इस साधना का सुखद अंत 1976 में तब हुआ जब चंद्रा को माइक्रोबायोलॉजी में डॉक्टरेट की उपाधि मिली। पुत्री के साथ उनकी माँ की कठिन साधना को देखकर लेखिका ने कहा कि डॉक्टरेट की उपाधि भी संयुक्त रूप से मिलनी चाहिए।

(घ) डॉ. चंद्रा की इच्छा थी कि वह डॉक्टर बने। परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने पर भी उन्हें मेडिकल में प्रवेश नहीं मिला

क्योंकि उनका निचला धड़ निर्जीव है, और वे एक सफल शल्य चिकित्सक नहीं बन पाएँगी। फिर डॉ. चंद्रा ने माइक्रोबायोलॉजी में डॉक्टरेट प्राप्त किया। इस तरह चिकित्सा के क्षेत्र में नहीं जा पाने वाली डॉ. चंद्रा ने विज्ञान के क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान दिया।

(ङ) डॉ. चंद्रा अपने कठिन परिश्रम और अपनी माँ के निरंतर सहयोग और साधना से आगे बढ़ीं। अपंग होने के बावजूद भी चंद्रा ने हार नहीं मानी और निरंतर अपने जीवन में संघर्षरत रहीं। अपनी अपंग पुत्री के जीवन में सक्रियता और सजीवता लाने के लिए चंद्रा की माँ ने हर पल अपनी पुत्री का सहयोग किया।

(च) इस पाठ से हमें अटूट धैर्य और साहस के साथ लक्ष्य तक पहुँचने की साधना करने की प्रेरणा मिलती है।

2. छात्र स्वयं करें।

3. (क) प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि ईश्वर प्रत्येक मनुष्य के जीवन में सुख और दुख के पल देता है। दुख के पलों में मनुष्य घबराता है। लेकिन दुख के ऐसे पल में भी ईश्वर मनुष्य के लिए एक द्वार बंद करता है तो दूसरा द्वार खोल देता है।

(ख) बचपन से लेकर बड़े होने तक अपंग होने के कारण चंद्रा ने प्रकृति के प्रत्येक कठोर चोट को अपने अति अमानवीय धैर्य और साहस से सहन किया। उस छोटी-सी बालिका के इस अदम्य साहस को देखकर यह प्रतीत हुआ कि वह किसी देवी से कम नहीं।

4. (क) (स) (✓) (ख) (अ) (✓)
(ग) (ब) (✓) (घ) (स) (✓)
(ङ) (ब) (✓) (च) (ब) (✓)

भाषा से

1. (क) (अ) (✓) (ख) (ब) (✓)
(ग) (अ) (✓) (घ) (अ) (✓)

3. कष्टप्रद हानिप्रद शिक्षाप्रद स्वास्थ्यप्रद

4. अपराजिता, वृद्धा, युवती, बहन, जननी, स्त्री, श्रीमती, पुत्री।

5.

विच्छिन्न	–	अलग	कठोरतम	–	सख्त
उत्तीर्ण	–	सफल	निर्जीव	–	बेजान
सुगम	–	सरल	रिक्त	–	खाली
प्रथम	–	पहला	नीरस	–	रसविहीन

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

कभी-कभी अचानक ही विधाता हमें ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व से मिला देता है, जिसे स्वयं अपने जीवन की रिक्तता बहुत छोटी लगने लगती है। हमें तब लगता है कि भले ही उस अंतर्यामी ने हमें जीवन में कभी अकस्मात अकारण ही दंडित कर दिया हो, किंतु हमारे किसी अंग को हमसे विछिन्न करके हमें उससे वंचित तो नहीं किया, फिर भी हममें से कौन-सा ऐसा मानव है जो विपत्ति के कठिन क्षणों में विधाता को दोषी नहीं ठहराता।

गहन सोच

ईश्वर सब द्वार एक साथ बंद नहीं करता है। यदि एक द्वार बंद करता है तो दूसरा द्वार भी खोल देता है। तभी तो दिव्यांग डॉ. चंद्रा जिसे सामान्य ज्वर से चौथा पक्षाघात हुआ तो गरदन के नीचे इसका सर्वांगअघत हो गया। लेकिन उनके अटूट धैर्य और अदम्य साहस और परिश्रमशीलता के साथ लक्ष्य तक पहुँचने में सफल भी हो गई।

2. अनुभव आधारित अधिगम

छात्र/छात्राएँ अपने जीवन का कोई ऐसा किस्सा बताएँ, जहाँ आपको किसी व्यक्ति से बहुत प्रेरणा मिली हो।

3. शोधपूरक कौशल

छात्र/छात्राएँ इंटरनेट से डॉ. मेरी वर्गीज़ के विषय में जानकारी प्राप्त करें।

4. संचार

छात्र/छात्राएँ कक्षा में अपने मित्रों के साथ–"विक्लांग को दिव्यांग बुलाना उचित है।" इस विषय पर चर्चा करें।

4. बूढ़ा कुत्ता

पाठ से

मौखिक

1. (क) कुत्ता बूढ़ा हो गया है। समूची देह में खौरा लग गया है।

(ख) लेखक के एक मित्र ने कहा, कुचिला खिला दीजिए, मर जाएगा। एक बंदूकधारी मित्र ने कहा, पचास पैसे भी बरबाद न होंगे, मैं इसे गोली से उड़ा देता हूँ। लेखक सोचते हैं कि इसकी इस बुरी गत से मौत अच्छी होगी, किंतु चाहकर भी कभी मुँह से 'हाँ' नहीं निकला।

(ग) शाम को जब कुत्ते की नींद खुली तो वह भी लेखक के पीछे-पीछे गाँव की ओर चल पड़ा। गाँव के कुत्ते अपनी अधिकार-सीमा के अंदर एक अपरिचित को देखकर भूँकने लगे।

(घ) घर में चोरी होने का दोष लेखक कुत्ते पर इसलिए नहीं डालना चाहता क्योंकि कुत्ते ने घर के लोगों को जगाने का काम ज़रूर किया परंतु सब गहरी नींद में सो रहे थे।

(ङ) कुत्ते की अधिक प्रीति और भक्ति सदा ही रानी के प्रति रही। इसका कारण यह था कि रानी इस कुत्ते का पूरा ध्यान रखती थी।

(च) कुत्ता घबराकर कार से नीचे कूद गया। उसके बाद लेखक अन्य लोगों के साथ कार में चले गए और कुत्ते को सामान के साथ आने वाली बैलगाड़ी के साथ भेज दिया।

लिखित

(क) कुत्ता बूढ़ा हो गया था, उसके समूचे देह में खौरा लग गया था। शरीर से बदबू निकल रही थी कि उबकाई आ जाए। इस कारण घर से सभी लोग उसे दुत्कारने फटकारने लगे। मार खाने पर भी यह तब तक मुड़ने का नाम नहीं लेता जब तक कि चोट असह्य नहीं हो जाती।

(ख) लेखक ने कुत्ते को पहली बार अपने घर में खाट के नीचे लेटा हुआ देखा। उसके बाद लेखक ने उसे खाने के लिए दही-भात दिया।

(ग) अच्छा भोजन, घर-भर का प्यार और सुरक्षा पाकर थोड़े ही दिनों में यह एक अच्छा-खासा कुत्ता बन गया। रोएँ चिकना गए, बदन के दाग मिट गए। जो कुत्ते पहली बार उसे देखकर भूँक रहे थे, उन्होंने उसे अपना सरदार मान लिया।

(घ) लेखक ने गाँव से दूर हटकर, खेत में घर बनवा लिया। घर के लोग जब रात में सो जाते थे तब यह कुत्ता घर के आस-पास चक्कर लगाने लगता था और ज्योंही दूरी पर किसी को देखा या ज़रा सी आहट पाई कि भूँकने लगता था।

(ङ) लेखक के घर में एक शादी हो रही थी। उस रात जब घर के लोग सोने गए तो घोड़े बेचकर सो गए। कुत्ता घर के सामने आकर गला फाड़-फाड़कर भूँकता रहा। इसी रात चोरों ने घर में सेंध लगाकर चोरी कर लिया।

(च) लेखक की पत्नी के मैके से हम कार से अपने घर वापस आ रहे थे। हमने चाहा कुत्ते को कार में बैठा लें, किंतु ज्योंही कार खुली, यह घबराकर नीचे कूद पड़ा। हम उसे छोड़ना नहीं चाहते थे। फिर हमने सामान के साथ जो बैलगाड़ी आ रही थी, उसके साथ ही कुत्ते को भेजा। दूसरे दिन कुत्ता घर पर आ पहुँचा। उसका सारा शरीर धूल-धूसरित हो गया था और उसके शरीर में बहुत-से ज़ख्म हो रहे थे।

2. (क) कुत्ता जब पहली बार लेखक के घर आया था तो गाँव के कुत्ते इस अपरिचित को देखकर भूँकने लगे। उस समय उसे सुरक्षा चाहिए थी। किन्तु बाद में अच्छा भोजन, घर-भर का प्यार और सुरक्षा पाकर थोड़े ही दिनों में यह एक अच्छा-खासा कुत्ता बन गया। आज वही मेरे घर-आँगन का प्रहरी बन गया।

(ख) कुत्ता जब लेखक की कार से घबराकर नीचे कूद गया तब उसे बैलगाड़ी के साथ भेज दिया गया। परंतु ज्योंही लेखक की कार आँखों से ओझल हुई, बैलगाड़ी की प्रतीक्षा किए बगैर वह वहाँ से निकला और रास्ते भर अपनी बिरादरी के लोगों से लड़ता-झगड़ता, उनके अनेक व्यूहों को अभिमन्यु-सा चीरता, रात में कहीं थोड़ा विश्राम कर, भोर होते ही हमारे यहाँ पहुँच गया।

3. छात्र स्वयं करें।

4. (क) (अ) (✓) (ख) (ब) (✓) (ग) (स) (✓)
(घ) (अ) (✓) (ङ) (द) (✓)

भाषा से

1.

	विशेषण	**विशेष्य**
करुण-सजल नेत्र	करुण-सजल	नेत्र
समूची देह	समूची	देह
बंदूकधारी मित्र	बंदूकधारी	मित्र
थोड़ा दही-भात	थोड़ा	दही-भात
अच्छा भोजन	अच्छा	भोजन
धूलि-धूसरित शरीर	धूलि-धूसरित	शरीर

2. बच्चा – बचपन उदास – उदासी
युवक – युवा सरल – सरलता
मधुर – मधुरता धमकाना – धमकी

3. (क) सटाकर (ख) चाहकर (ग) पाकर
(घ) फाड़-फाड़कर (ङ) खुली

4. (क) स्वामिभक्त (ख) धूल-धूसरित

(ग) कर्तव्यपरायण (घ) अनजान

(ङ) असहनीय

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

कुत्ते की लेखक से पहली मुलाकात घर के बरामदे में हुई। जो एक दिन गरमी की दुपहरिया में घर में न जाने कब घुसकर खाट के नीचे लेट गया था।

गहन सोच

लेखक कभी भी अपने मित्रों की सलाह पर हाँ में उत्तर इसलिए नहीं दे पाता था, क्योंकि एक मित्र ने कहा, "कुचिला खिला दीजिए, मर जाएगा।" एक बंदूकधारी मित्र बोले, "पचास पैसे भी बरबाद न होंगे, गोली से उड़ा देता हूँ।" सोचता हूँ इस बुरी गत से मौत अच्छी होगी, किंतु चाहकर के भी कभी मुँह से 'हाँ' नहीं निकाल पाता।

2. विषय संवर्धन गतिविधि

कुत्ते में बहुत से ऐसे गुण होते है जो उन्हें बाकी पशुओं से अलग बनाते है वह है उसका स्वामिभक्त, कर्तव्यपरायण तथा साहसी का गुण जिस कारण मनुष्य कुत्तों को पालना पसंद करता है।

3. कल्पना

छात्र/छात्राएँ स्वयं उत्तर दें।

4. कला समेकन

छात्र/छात्राएँ अपने घर के आस-पड़ोस के किसी-न-किसी पालतू पशु का चित्र बनाकर उसमें रंग भरें।

5. प्रकृति का सान्निध्य

पाठ से

मौखिक

1. (क) मनुष्य एक विशेष प्रकार के आवरण से घिरा है।

   (ख) मानव प्रकृति की संतान है।

   (ग) पाठ के अनुसार लेखक ने देहरादून और मसूरी का भ्रमण किया।

   (घ) बादल अपना आकार, अपना स्वरूप और अपना गठन बदलते रहते हैं। बादल क्षण में श्वेत, क्षण में श्याम और क्षण में वर्ण-विहीन हो जाते हैं।

लिखित

(क) लेखक के मन में प्राकृतिक स्थानों के दर्शन और सहवास से संबंधित विचार नहीं आते, इसलिए कई व्यवहार-कुशल लोग लेखक की आलोचना करते हैं।

(ख) प्रकृति और मनुष्य एक-दूसरे के पूरक हैं। प्रकृति एक परिवार की तरह है, जिसमें पेड़-पौधे और पशु-पक्षियों के साथ नदी, पहाड़ और मनुष्य भी सम्मिलित है। प्रकृति से यदि मनुष्य पूरी तरह विच्छिन्न हो जाए तो उसका अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा।

(ग) लेखक को हिमालय में कभी-कभी नाटे बने हुए मनुष्यों और जानवरों को देखकर दुख होता है और उनका सारा विषय जीवन-क्रम उनकी नज़र के सामने से गुज़रता है।

(घ) आदमीयत अर्थात मानवता के हमारे ऊँचे-ऊँचे आदर्श पशु-पक्षी नहीं जानते क्योंकि मानव-जाति का उनका अनुभव बहुत कड़वा है। हम जैसे 'हैवानियत' शब्द तिरस्कार के साथ इस्तेमाल करते हैं, वैसे ही पशु-पक्षी 'आदमीयत' शब्द इस्तेमाल करते होंगे और उसमें अपना सारा कड़वा अनुभव व्यक्त करते होंगे।

(ङ) हिम-शिखरों पर विहार करने वाले बादल देखते-ही-देखते अपना आकार, अपना स्वरूप और अपना गठन बदलते रहते हैं। बादल

आगे-पीछे, ऊपर-नीचे, दसों दिशाओं में दौड़ते हैं, फूलते हैं और पिघल जाते हैं। क्षण में श्वेत, क्षण में श्याम और क्षण में वर्ण-विहीन हो जाते हैं बादल।

(च) प्रस्तुत पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है कि प्रकृति और मनुष्य का संबंध बहुत महत्त्वपूर्ण है। यदि प्रकृति से मनुष्य पूरी तरह विच्छिन्न हो जाए तो उसका अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा। विकास के लिए प्रकृति का उसी हद तक प्रयोग होना चाहिए जिस हद तक स्थिति सहनीय हो।

2. (क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✗) (घ) (✗) (ङ) (✓)

3. (क) प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से मानव और पशु-पक्षी के कड़वे संबंधों को स्पष्ट किया गया है। मानवता के आदर्श तो ऊँचे-ऊँचे हैं लेकिन पशु-पक्षियों के प्रति मनुष्य का व्यवहार कड़वा रहा है।

(ख) प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से बादलों के बदलते स्वरूप, आकार और गठन को स्पष्ट किया गया है। बादल भी इस परिवर्तन का आनंद लेते हैं और बाद में उससे हट कर अपने जीवन की साधना में लग जाते हैं।

4. (क) (स) (✓) (ख) (स) (✓)

(ग) (स) (✓)

भाषा से

1. (क) (ब) (✓) (ख) (स) (✓)

(ग) (द) (✓) (घ) (द) (✓)

2. (क) पेड़-पौधों <u>के बिना</u> हमसे रहा नहीं जाता।

(ख) कुदरत <u>के बीच</u> हम बालक जैसे हैं।

(ग) अधिक पौधे लगाने <u>की ओर</u> ध्यान देना चाहिए।

(घ) मनुष्य प्रकृति <u>से दूर</u> होता गया।

(ङ) मैं देहरादून <u>के पास</u> गुच्छूपानी देखने गया।

3. जो बनावटी हो – कृत्रिम

नख से शिख तक – नख-शिखांत

जो व्यवहार में कुशल हो – व्यवहारकुशल

जो उत्साह से भरा हो – उत्साही

जो राक्षसी प्रवृत्ति का हो – हैवानियत

जो किए हुए उपकार को माने – कृतज्ञ

जिसमें अपनापन हो – आत्मीयता

जो आलोचना करे – आलोचक

4. ध्यानपूर्वक – कक्षा में बच्चे ध्यानपूर्वक शिक्षक की बातों को सुन रहे थे।

शांतिपूर्वक – सभी बच्चे प्रार्थना के बाद शांतिपूर्वक अपनी-अपनी कक्षाओं में चले गए।

सरलतापूर्वक – बच्चों ने कक्षा कार्य सरलतापूर्वक पूरा कर लिया।

साहसपूर्वक – भारतीय सैनिकों ने सीमा पर घुसपैठियों को साहसपूर्वक खदेड़ दिया।

धैर्यपूर्वक – संकट की घड़ी में भी परिवार के सदस्य धैर्यपूर्वक संकट का सामना मिल-जुलकर कर रहे थे।

5. विशेष – सामान्य कृत्रिम – प्राकृतिक

स्वजन – परिजन विशाल – लघु

तिरस्कार – सम्मान मानव – पशु

6. (क) इसलिए उनके दर्शन को तरसता हूँ।

(ख) परिवर्तन से न अकुलाना हमारा व्रत है।

(ग) लोग जान जोखिम में डालते हैं।

(घ) मैं आप लोगों की दुनिया में आ गया हूँ।

(ङ) वास्तव में हम प्रकृति के बालक हैं।

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. गहन सोच

पेड़-पौधे, पशु-पक्षियों, नदियों, पर्वतों की रक्षा और रख-रखाव इसलिए जरूरी है क्योंकि ये ही हमलोग के पोषक और रक्षक हैं। प्रकृति से मनुष्य का चोली-दामन का साथ है। प्रकृति एक परिवार की तरह है, जिसमें पेड़-पौधे और पशु-पक्षियों के साथ नदी, पहाड़ और मनुष्य भी सम्मिलित है। यदि प्रकृति से मनुष्य पूरी तरह विच्छिन्न हो जाए तो उसका अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा। विकास के लिए प्रकृति का उसी हद तक प्रयोग होना चाहिए जिस हद तक स्थिति सहनीय हो।

2. संचार

छात्र/छात्राएँ कक्षा में अपने सहपाठियों के साथ प्रकृति के विभिन्न रूप (पेड़, पर्वत, नदी, झील, जीव-जंतु आदि) हमें अपनी ओर क्यों आकर्षित करते हैं? विषय पर चर्चा करें।

3. कला समेकन

छात्र/छात्राएँ भारत के विभिन्न स्थानों के प्राकृतिक दृश्यों का संकलन करके एक भित्ति-पत्रिका बनाएँ तथा इनके दृश्यों के बारे में अपने विचार भी लिखे।

4. कल्पना

छात्र/छात्राएँ अपने-अपने शब्दों में उत्तर लिखें।

6. समाधि

पाठ से

मौखिक

1. (क) यह लघु समाधि झाँसी की रानी की है।

(ख) कवयित्री ने झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की समाधि को रानी से भी अधिक प्यारी इसलिए कहा है क्योंकि यहाँ स्वतंत्रता की आशा की चिनगारी निहित है।

(ग) सामान्य लोगों की एक-से एक सुंदर समाधियाँ हैं पर रात में उन पर क्षुद्र जंतु ही गाते हैं।

(घ) बुंदेले हरबोलों के मुख से हमने झाँसी की रानी की वीरता की कहानी सुनी है।

लिखित

(क) रानी लक्ष्मीबाई की समाधि में राख की एक ढेरी छिपी हुई है।

(ख) लक्ष्मीबाई की समाधि को उनकी अंतिम लीला-स्थली इसलिए कहा गया है क्योंकि उसी भूमि पर अंग्रेज़ों से वीरतापूर्वक संघर्ष करते हुए लक्ष्मीबाई वीरगति को प्राप्त हुईं।

(ग) रानी एक वीर पुरुष से भी ज्यादा पराक्रम के साथ अंग्रेजों से लड़ीं। वार पर वार सहती रहीं और एक वीर बाला के समान लड़ती रहीं। अंग्रेज़ों के कुशासन को उखाड़ फेंकने के उद्देश्य से रानी ने यह युद्ध लड़ा।

(घ) वीरों का मान तब बढ़ जाता है जब युद्ध में वे अपना बलिदान देते हैं।

(ङ) कवयित्री के अनुसार झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई वीर बाला के समान अद्भुत पराक्रम के साथ अंग्रेज़ों से लड़ीं। उन्होंने युद्ध में वार पर वार सहा परंतु उनके पराक्रम में कोई कमी नहीं आई। वीरतापूर्वक लड़ते हुए उन्होंने अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया।

2. (क) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवयित्री ने झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की समाधि स्थल का वर्णन किया है। उनका यह कहना है कि समाधि ही वह स्थान है जहाँ टूटी हुई माला के समान रानी बिखर गईं और उसके फूल इसी स्थान पर एकत्रित हैं। यह स्थान अब केवल स्मृति के रूप में है।

(ख) प्रस्तुत पंक्तियों में कवयित्री का यह कहना है कि रानी लक्ष्मीबाई की समाधि अब रानी से भी अधिक प्यारी है क्योंकि यहाँ स्वतंत्रता की आशा की चिनगारी निहित है।

3. छात्र स्वयं करें।

4. (क) (स) (✓) (ख) (अ) (✓)
(ग) (द) (✓) (घ) (ब) (✓)
(ङ) (स) (✓)

भाषा से

1. पाठ + शाला = पाठशाला भाग्यवती + वती = भाग्यवती
व्यायाम + शाला = व्यायामशाला ज्ञान + वती = ज्ञानवती

2. (क) परतंत्रता (ख) विशाल
(ग) पराजय (घ) कायर
(ङ) अपमान (च) निराशा

3. रण – युद्ध दिव्य – अलौकिक लघु – छोटी
संचित – जमा भग्न – खंडित निशीथ – रात
निहित – संलग्न जग – संसार चिर – स्थायी

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

कविता में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की समाधि की बात की गई है और यह बाकी सुंदर समाधियों से इस मामले अलग है क्योंकि झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई शत्रुओं के वार लगातार अंत तक सहते हुए देश की

आन की रक्षा में अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया। तभी तो कहा गया है कि– 'खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।'

गहन सोच

महारानी लक्ष्मीबाई झाँसी की रानी थी। वह शत्रुओं से देश के आन, बान तथा शान की रक्षा के उद्देश्य से लड़ी थी।

2. विषय संवर्धन गतिविधि

महारानी लक्ष्मीबाई की गाथा इसलिए महान है क्योंकि– "बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।" इन पंक्तियों से लगभग हर भारतीय परिचित है। लक्ष्मीबाई 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की महिला सेनानी, झाँसी की रानी, वीरता और समर्पण से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में 17 जून, 1858 में ग्वालियर में शहीद हुई। रानी लक्ष्मीबाई वीरता का प्रतिबिंब है, इसलिए इनकी गाथा महान है।

3. कला समेकन

इस कविता का सस्वर गान करके अपनी कक्षा के अध्यापक/अध्यापिका को सुनाएँ।

4. भारत का ज्ञान

छात्र/छात्राएँ इंटरनेट से जानकारी प्राप्त कर पाँच–पाँच पंक्तियाँ लिखें।

7. सोना

पाठ से

मौखिक

1. (क) लेखिका के परिचित स्वर्गीय डॉ. धीरेंद्र बसु की पौत्री सुष्मिता ने लेखिका से हिरन पालने की प्रार्थना की।

   (ख) सोना को लेखिका के पास सुष्मिता लेकर आई जब सोना अपनी शैशवावस्था में थी।

(ग) लेखिका ने नवजात सोना का लालन-पालन करने के लिए दूध पिलाने की शीशी, ग्लूकोज़, बकरी का दूध आदि सब कुछ एकत्र किया।

(घ) फ़्लोरा अपने बच्चों को सोना के पास इसलिए छोड़ देती थी क्योंकि वह सोना के स्नेही और अहिंसक प्रवृति से परिचित थी।

लिखित

(क) लेखिका महादेवी वर्मा ने कई वर्ष पहले निश्चय किया था कि वे अब हिरन नहीं पालेंगी। उन्हें अपना निश्चय इसलिए बदलना पड़ा क्योंकि अगर वे ऐसा नहीं करतीं तो नन्हें, कोमल हिरन के शावक की जीव रक्षा संभव नहीं हो पाता।

(ख) मनुष्य मृत्यु को असुंदर ही नहीं, अपवित्र भी मानता है। उसके प्रियतम आत्मीय जन का शव भी उसके निकट अपवित्र, अस्पृश्य तथा भयजनक हो उठता है। जब मृत्यु इतनी अपवित्र और असुंदर है तब उसे बाँटते घूमना क्यों अपवित्र और असुंदर कार्य नहीं, लेखिका यह समझ नहीं पाती।

(ग) सोना का दिनभर का कार्यकलाप एक प्रकार से निश्चित था। दूध पीकर और भीगे चने खाकर सोना कुछ देर कंपाउंड में चारों पैरों को संतुलित करके चौकड़ी भरती, फिर वह छात्रावास पहुँचती और प्रत्येक कमरे का भीतर-बाहर निरीक्षण करती। छात्रावास का जागरण और जलपान अध्याय समाप्त होने पर वह घास के मैदान में कभी दूब चरती और कभी उस पर लोटती रहती। घंटी बजते ही वह फिर प्रार्थना के मैदान में पहुँच जाती और उनके समाप्त होने पर छात्रावास के समान ही कक्षाओं के भीतर-बाहर चक्कर लगाना आरंभ करती।

(घ) सोना को छोटे बच्चे अधिक प्रिय थे, क्योंकि उनके साथ खेलने का उसे अधिक अवकाश रहता था।

(ङ) कुत्ता, स्वामी और सेवक का अंतर जानता है और स्वामी के स्नेह या क्रोध करते ही सभीत और दयनीय बनकर दुबक जाता

है, पर हिरण यह अंतर नहीं जानता, अतः उसका पालनेवाले से डरना कठिन है। यदि उस पर क्रोध किया जाए तो वह अपनी चकित आँखों में और अधिक विस्मय भरकर पालनेवाले की दृष्टि से दृष्टि मिलाकर खड़ा रहेगा।

(च) एक दिन न जाने किस स्तब्धता की स्थिति में बंधन-सीमा भूलकर सोना बहुत ऊँचाई तक उछली और रस्सी के कारण मुख के बल धरती पर आ गिरी। वही उसकी अंतिम सांस और अंतिम उछाल थी।

2. (क) सोना का कोमल लघु शरीर सुनहरे रंग के रेशमी लच्छों की गाँठ के समान था। उसका मुँह छोटा और बड़ी-बड़ी पानीदार आँखें थीं। उसके कान लंबे तथा पतली सुडौल टाँगें थीं।

(ख) पशु-जगत में हिरन जैसा निरीह और सुंदर दूसरा पशु नहीं है। कुत्ता, स्वामी और सेवक का अंतर जानता है और स्वामी के स्नेह या क्रोध करते ही सभीत और दयनीय बनकर दुबक जाता है, पर हिरन यह अंतर नहीं जानता। अतः उसका पालनेवाले से डरना कठिन है। यदि उस पर क्रोध किया जाए तो वह अपनी चकित आँखों में और अधिक विस्मय भरकर पालनेवाले की दृष्टि से दृष्टि मिलाकर खड़ा रहेगा।

3. छात्र स्वयं करें।

4. (क) (ब) (✓) (ख) (अ) (✓)
(ग) (द) (✓) (घ) (ब) (✓)

भाषा से

1. ग्रीष्मावकाश पर्यावरण मध्वालय न्यायालय
सत्याग्रह सूर्यास्त वार्तालाप सूर्योदय
अत्याचार वार्षिकोत्सव

2. (क) (अ) (✓) (ख) (ब) (✓) (ग) (स) (✓)

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. गहन सोच

लेखक से हिरन पालने की प्रार्थना उसके (लेखिका) परिचित स्वर्गीय डॉ. धीरेंद्र बसु की पौत्री को उसके पड़ोसी से एक हिरन मिला जिसके पालने की प्रार्थना उन्होंने इसलिए की क्योंकि सघन जंगल से संबंद्ध रहने का कारण तथा अब बड़े हो जाने को कारण उसे घूमने के लिए अधिक विस्तृत स्थान चाहिए।

2. रचनात्मक सोच

छात्र/छात्राएँ पशु प्रेम पर एक लेख पर कविता स्वयं लिखे।

3. विषय संवर्धन गतिविधि

छात्र/छात्राएँ महादेवी वर्मा की गौरा, गिल्लू या अन्य रचनाएँ पढ़ें और 'सोना' नामक इस रचना के साथ तुलनात्मक विश्लेषण करें।

4. अनुभव आधारित अधिगम

छात्र/छात्राएँ अपने अनुभव का वर्णन करें।

5. कला समेकन

छात्र/छात्राएँ दिए गए चित्र को पूरा कर उसमें उचित रंग भरें।

8. प्रेमचंद : संघर्षों में खिला गुलाब

पाठ से

मौखिक

1. (क) प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई सन 1880 को वाराणसी के निकट लमही नामक गाँव में हुआ था।

   (ख) प्रेमचंद का असली नाम धनपत राय था।

(ग) 'प्रेमाश्रम' उपन्यास उर्दू में 'गोएश आफ़ियत' के नाम से प्रकाशित हुआ था।

(घ) प्रेमचंद का जीवन संघर्षपूर्ण रहा। उनकी आर्थिक स्थिति दयनीय थी। उनका जीवन सदा काँटोंरूपी विपरीत परिस्थितियों से घिरा रहा।

(ङ) मृत्यु के समय प्रेमचंद के पास प्रसिद्ध कथाकार जैनेंद्र कुमार थे।

लिखित

(क) यह पत्र कथाकार जैनेंद्र कुमार ने रमन को लिखा है।

(ख) पत्र के द्वारा लेखक के मित्र के विषय में यह पता चलता है कि उन्होंने हमेशा प्रेमचंद का साथ दिया।

(ग) प्रेमचंद के पिता अजायबलाल डाकघर में क्लर्क थे। उनकी माता आनंद देवी संस्कारवान महिला थीं। जब वे सात वर्ष के थे तो उनकी माता की मृत्यु हो गई थी। उनकी माता की मृत्यु के पश्चात उनके पिता ने दूसरा विवाह कर लिया। प्रेमचंद जब पंद्रह वर्ष के हुए तो उनके पिता की मृत्यु हो गई। प्रेमचंद के सौतेले नाना ने उनका विवाह कर दिया।

(घ) प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपत राय था, परंतु वे नवाब राय के नाम से लिखते थे। कहानी संग्रह 'सोज़े वतन' के जब्त होने पर उन्होंने अपना नया साहित्यिक नाम प्रेमचंद रखा। इस नाम का सुझाव उनके मित्र दयानारायण निगम ने दिया था।

(ङ) 'सप्त सरोज' में प्रेमचंद की सात कहानियाँ छपीं। ये हैं—बड़े घर की बेटी, सौत, सज्जनता का दंड, पंच-परमेश्वर, नामक का दारोगा, उपदेश और परीक्षा।

(च) प्रेमचंद पर महात्मा गाँधी की विचारधारा का गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने मई 1918 से लेकर फरवरी 1920 तक उर्दू में 'गोएश आफ़ियत' उपन्यास लिखा, जो हिंदी में 'प्रेमाश्रम' नाम से प्रकाशित हुआ। इस पर महात्मा गाँधी के सत्याग्रह आंदोलन का स्पष्ट प्रभाव था। इसमें किसानों के शोषण का मार्मिक चित्रण किया गया

है। प्रेमचंद महात्मा गाँधी के आंदोलनों के प्रशंसक थे। महात्मा गाँधी का इन पर इतना प्रभाव पड़ा कि उन्होंने सरकारी नौकरी से त्याग-पत्र दे दिया।

(छ) प्रेमचंद की मृत्यु से पूर्व के समय के विषय में जैनेंद्र कुमार ने लिखा था–''मौत से पहली रात मैं उनकी खटिया के बराबर बैठा था। सबेरे सात बजे उन्होंने इस दुनिया से आँखें मीच ली थी। उसी सवेरे तीन बजे मुझसे बातें हुईं। चारों ओर सन्नाटा था। कमरा छोटा और अँधेरा था। सब सोए पड़े थे। शब्द उनके मुँह से फुसफुसाहट में निकलकर खो जाते थे।''

(ज) प्रेमचंद की कहानी संग्रह में 'सोज़े वतन', 'प्रेम पचीसी', 'सप्त सरोज' तथा उपन्यास में 'वरदान', 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि', 'कायाकल्प', 'निर्मला', 'गबन', 'कर्मभूमि' तथा 'गोदान' और नाटक में 'संग्राम' तथा 'कर्बला' प्रमुख रचनाएँ हैं।

2. (क) 18 अगस्त 1916 को प्रेमचंद गोरखपुर में सहायक शिक्षक बनकर आए।

(ख) बड़े घर की बेटी, सौत, सज्जनता का दंड, पंच-परमेश्वर, नमक का दारोगा, उपदेश और परीक्षा।

(ग) प्रेमचंद का पहला उपन्यास 'सेवा सदन' था जो 1918 में छपा।

(घ) सेवा सदन मूलत: 'बाज़ारे हुस्न' नाम से लिया गया।

3. प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि हमारे जीवन में तरह-तरह की बाधाएँ आती रहती हैं, जो हमें विचलित कर देती हैं। परंतु हम पुन: धैर्य और लगन से अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो जाते हैं। प्रेमचंद का जीवन भी निरंतर संघर्ष में बीता। उनकी आर्थिक स्थिति भी दयनीय थी। परंतु इन विपरीत परिस्थितियों से घिरे रहने के बावजूद भी उन्होंने अपने लेखन कार्य से सबको संतुष्ट किया। उनकी रचनाएँ आज भी गुलाब के समान सुगंध बिखेरती हैं।

4. (क) (स) (✓) (ख) (अ) (✓)

(ग) (ब) (✓) (घ) (अ) (✓)

(ङ) (स) (✓)

भाषा से

1. निस्संकोच मरुस्थल अंतस्थल निस्संतान

3. कार्यरत, प्रयासरत गाड़ीवान, मूल्यवान

4. साप्ताहिक साहित्यिक

   सहायक वैवाहिक

   वास्तविक आर्थिक

5. (क) प्रेमचंद महान कथाकार थे।

   (ख) उसकी नानी चली गईं।

   (ग) इस कार्य में बहुत लाभ है।

   (घ) सौतेली माता ने उन्हें बहुत कष्ट दिया।

   (ङ) प्रेमचंद ने अपने जीवन में इसी प्रकार संघर्ष किया।

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

प्रेमचंद का जीवन संघर्षों में व्यतीत हुआ। पिता की मृत्यु और कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण उन्हें कम उम्र में ही नौकरी करनी पड़ी। प्रेमचंद की आर्थिक स्थिति दयनीय थी। उन्होंने बस्ती में रहते हुए– दयानारायण निगम थे। पत्र लिखा था–"अगर आप बगैर ज्यादा तरद्दुद के एक तीन-चार रुपए की घड़ी और साढ़े चार रुपए का जूता भिजवा सकें तो आपका बहुत ममनून होऊँगा। ...मेरा जूता छौअक ने ले लिया है।" प्रेमचंद की आर्थिक दुर्दशा की झलक इससे मिल जाती है। वे घड़ी और जूते तक के लिए मित्र से अनुरोध करने पर विवश हो गए थे।

गहन सोच

18 अगस्त, 1916 को प्रेमचंद गोरखपुर में सहायक शिक्षक बनकर आए। लेकिन प्रेमचंद सरकारी नौकरी से तंग आ चुके थे। उन्हें सरकारी सेवा जरा भी रास नहीं आई।

2. विषय संवर्धन गतिविधि

छात्र/छात्राएँ स्वयं उत्तर दें।

3. अनुभव आधारित अधिगम

छात्र/छात्राएँ स्वयं उत्तर दें।

4. भारत का ज्ञान

छात्र/छात्राएँ इंटरनेट से भारत के प्रमुख साहित्यकारों की जानकारी प्राप्त कर स्वयं सूची बनाएँ।

9. सारनाथ

पाठ से

मौखिक

1. (क) सारनाथ उत्तर प्रदेश में है।

   (ख) सारनाथ बौद्धों का पवित्र तीर्थस्थल है। सारनाथ में अशोक स्तंभ है।

   (ग) ज्ञान प्राप्ति के बाद गौतम बुद्ध ने सारनाथ में ही अपना पहला उपदेश दिया था, जो धर्म-चक्र-प्रवर्तन के नाम से जाना जाता है।

   (घ) अशोक स्तंभ के ऊपरी भाग को किसी विद्वान ने उल्टा कमल का फूल कहा है तो किसी ने फारस का घंटा।

लिखित

(क) गौतम बुद्ध अपनी पत्नी यशोधरा और पुत्र राहुल को सोता छोड़कर ज्ञान की खोज में घर से निकल पड़े। उनके पाँच शिष्य बने। वे पाँचों भी उनके ज्ञान-प्राप्ति के मार्ग को गलत समझकर

उन्हें बोधगया में अकेला छोड़कर भाग गए। फिर तपस्या आदि के बाद जब बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई तब उन्होंने सबसे पहले उन्हीं पाँच शिष्यों को सारनाथ में अपना पहला उपदेश दिया था। बौद्ध धर्म की यह एक महान घटना थी, जिसे बौद्ध साहित्य में 'धर्म-चक्र प्रवर्तन' कहते हैं।

(ख) सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म का अनुयायी बनने के बाद सारनाथ में कई स्मारक बनवाए। इनमें सबसे प्रमुख है–अशोक स्तंभ।

(ग) अशोक स्तंभ का शीर्ष भाग चार सिंहों से युक्त है। चारों सिंहों के मुँह एक-दूसरे से विपरीत दिशा में हैं, किन्तु पीठ आपस में इस तरह सटी है जैसे एक ही हों। इस शीर्ष भाग की ऊँचाई छह फुट से अधिक है। सिंहों के बीच में एक चक्र है, जो धर्म चक्र है जिसकी तीलियों की संख्या 24 है। सिंहों की मूँछें, नेत्र, अयाल और खुले हुए मुख अस्वाभाविक होते हुए भी बड़े प्रभावशाली हैं। यहाँ तक कि सिंहों के पैरों के पंजे भी बने हुए हैं। चार मुखवाला सिंह जिस आसन पर खड़ा है, उसके बीच में एक चक्र है। अश्व, मृग, साँड़ और हाथी की मूर्तियाँ खुदी हैं। सिंहों के मुखों में जहाँ अस्वाभाविकता और विचित्रता है, वहाँ इन मूर्तियों में स्वाभाविकता और सजीवता है। घोड़े की गति, साँड़ का बल, मृग की चंचलता और हाथी की मांसलता की पत्थर में जिस सुंदरता से अभिव्यक्ति हुई है, वह प्रशंसनीय है।

(घ) इतिहासकारों ने सारनाथ की इस सिंह प्रतिमा की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। वे इसे कला का उत्तम नमूना मानते हैं। इस स्तंभ के सिंह जंगलों में रहनेवाले साधारण सिंह नहीं हैं। इनमें उच्च भावनाओं की झलक मिलती है।

(ङ) सारनाथ में दो मूर्तियाँ मिलीं। पहली, कनिष्क के काल की एक विशाल बोधिसत्व प्रतिमा है और दूसरी गुप्तकाल की एक सुंदर धर्म-चक्र प्रवर्तन मुद्रा में भगवान बुद्ध की मूर्ति है। बुद्ध मूर्ति न केवल अपने सौंदर्य से हमें आकर्षित करती है, अपितु अपनी बाहरी और भीतरी सुंदरता से हमारे मन में उल्लास भी जगाती है।

बुद्ध के दोनों कंधे सुंदर रेशमी महीन वस्त्रों से ढँके हैं। वे वस्त्र पैरों तक हैं। बुद्ध के माथे पर चारों ओर प्रभामंडल है। प्रभामंडल के दोनों ओर दो देवी मूर्तियाँ हैं, फूलों का पात्र हाथ में लिए हुए हैं। बुद्ध की प्रतिमा की चौकी के बीच में एक धर्म-चक्र तथा उसके दोनों ओर दो हिरन दिखाई देते हैं। मूर्ति के दोनों ओर दो व्याल अपने माथे पर भारी पत्थर लिए हुए हैं। मूर्ति के बायीं ओर एक बालक तथा स्त्री की आकृति है। बुद्ध के चेहरे पर अनुपम शांति, गंभीरता, कांति और अलौकिक सौंदर्य है।

भाषा से

1. (क) (अ) (✓) (ख) (अ) (✓) (ग) (अ) (✓)
   (घ) (ब) (✓) (ङ) (अ) (✓) (च) (स) (✓)
2. (क) "धर्म-चक्र प्रवर्तन क्या होता है गुरु जी?" पंकज ने उठकर पूछा।
   (ख) अरे! मैंने तो यह सोचा भी न था।
   (ग) उस चक्र के बीच में अश्व, मृग, साँड़ और हाथी की मूर्तियाँ खुदी हैं।
   (घ) अशोक के स्तंभ साँची, दिल्ली, कौशांबी, लुंबिनी, वैशाली आदि स्थानों पर लगे हुए हैं।
   (ङ) क्या तुमने वाराणसी के बारे में नहीं सुना? मैंने आश्चर्य से सिमरन से पूछा।
3. (क) द्विकर्मक (ख) द्विकर्मक (ग) द्विकर्मक
   (घ) प्रेरणार्थक (ङ) प्रेरणार्थक (च) द्विकर्मक
4. (क) (द) (✗) (ख) (द) (✗)
   (ग) (अ) (✗) (घ) (अ) (✗)
   (ङ) (स) (✗) (च) (अ) (✗)

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

गौतम बुद्ध का सारनाथ से आध्यात्मिक संबंध है। सारनाथ वाराणसी से चार मील उत्तर की दिशा में स्थित है। सारनाथ बौद्ध का पवित्र तीर्थस्थान है। गौतम बुद्ध ने अपना धर्म-चक्र-प्रवर्तन यही किया थी। सारनाथ को ज्ञान-प्राप्ति बोध गया में हुआ जहाँ उनके पाँचों शिष्यों ने उन्हें अकेला छोड़कर भाग गए थे। फिर तपस्या आदि के बाद जब बुद्ध को ज्ञान-प्राप्ति हुई तब उन्होंने सबसे पहले उन्हीं शिष्यों को सारनाथ में अपना पहला उद्देश्य दिया। बौद्ध धर्म की यह एक महान घटना थी। उसे ही बौद्ध साहित्य में 'धर्म-चक्र-प्रवर्तन' कहते है।'

गहन सोच

बौद्ध साहित्य में धर्म-चक्र-प्रवर्तन के नाम से इसे इस प्रकार जाना जाता है कि जब ज्ञान की खोज में निकले गौतम बुद्ध को उनके अपने ही पाँचों शिष्यों ने बोध गया में अकेला छोड़कर भाग गए तो उसके बाद गौतम बुद्ध ने फिर तपस्या करके ज्ञान प्राप्त किया और उन्होंने सबसे पहले उन्हीं पाँचों शिष्यों को सारनाथ में उपदेश दिया था। बौद्ध धर्म की यह एक महान घटना थी। उसे ही बौद्ध धर्म में 'धर्म-चक्र-प्रवर्तन' कहते हैं।

2. विषय संवर्धन गतिविधि

सम्राट अशोक की बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में बड़ी ही महत्वपूर्ण भूमिका रही है। मौर्य सम्राट अशोक जब बौद्ध धर्म का अनुयायी बना तो उसने सारनाथ में कई स्मारक बनवाए इनमें सबसे प्रमुख था– अशोक स्तंभ। अशोक स्तंभ पर लेख खुदवाए। स्तूप, विहार आदि का निर्माण भी करवाया।

3. कला समेकन

छात्र/छात्राएँ महात्मा बुद्ध के जीवन के विषय में जानकारी प्राप्त करके परियोजना कॉपी में चित्र के साथ प्रस्तुत करें।

4. वैश्विक जागरूकता

आज विश्व के 6 से अधिक देशों में (गणतंत्र राज्य भी) में बौद्ध धर्म प्रमुख रूप से है। विश्व में लाओस, कंबोडिया, भूटान, थाइलैंड, म्यांमार और श्रीलंका ये छह देश अधिकृत बौद्ध देश क्योंकि इन देशों के संविधानों में 'बौद्ध धर्म' को 'राजधर्म' या 'राष्ट्रधर्म' का दर्जा प्राप्त है।

5. भारत का ज्ञान

बौद्ध धर्म के प्रमुख ग्रंथ त्रिपिटक है। त्रिपिटक को तीन भागों में विभाजित किया गया है– विनयपिटक, सुतपिटक और अनिधम्म पिटक। त्रिपिटक के रूप में जाने वाले इस पवित्र ग्रंथ में बुद्ध की शिक्षाएँ शामिल हैं। जिन्हें सामूहिक रूप से धर्म के रूप में जाना जाता है।

10. टापू की खोज

पाठ से

मौखिक

1. (क) चावरा द्वीप अंडमान निकोबार द्वीप समूह में स्थित है। इसकी खोज कारनिकोबार के वासियों ने की थी।

   (ख) निकोबारियों पर एक ही धुन सवार रहने लगी कि कुछ-न-कुछ करना है; इसलिए तरह-तरह के प्रयोग होने लगे।

   (ग) केनो जब निकट के एक द्वीप चावरा के तट पर पहुँची तो निवासियों ने इस अद्भुत चीज़ (नाव) को देखा और देखते-देखते खबर सभी तक जा पहुँची।

   (घ) चावरावासियों के बीच यह तय हुआ कि सबसे पहले नाव को देखकर उसे बनाने की कला समझी जाए। सो उन्होंने उसे उलट-पुलटकर और पानी में तैराकर देखा।

   (ङ) केनो के लौट आने पर निकोबार के लोगों की यह धारणा विश्वास में बदल गई कि आस-पास कोई द्वीप है, जहाँ मनुष्य रहते हैं।

(च) कुछ दिन चावरा द्वीप में ही बिताने के बाद निकोबारियों ने वापस आने की इच्छा प्रकट की। फिर चावरावासियों ने उन्हें मिट्टी के बड़े-बड़े दस बरतन उपहार में देकर विदा किया।

लिखित

(क) निकोबारी आदिवासियों के मन में यह विचार आया कि अन्य द्वीपों की खोज करनी चाहिए। उनका यह मानना था कि कुछ और लोग कहीं और भी बसते हैं। अगर यह सच हुआ तो हम कुछ और लोगों को भी जान सकेंगे।

(ख) छोटी-सी नाव का नाम केनो रखा गया। केनो में याम (जमीकंद) और कुछ फल भरकर समुद्र में छोड़ा गया।

(ग) केनो देखकर चावरा द्वीप के बुजुर्गों ने यह निष्कर्ष निकाला कि आस-पास ही कहीं एक द्वीप या देश है, जहाँ से यह अद्भुत वस्तु आई है।

(घ) कहानी का दूसरा हिस्सा चावरावासियों की वजह से आगे बढ़ता है। चावरा के लोगों में भी उतनी ही उत्सुकता पैदा हुई। वे भी उन अनाम लोगों के बारे में जानना चाहते थे, जिन्होंने नाव का निर्माण करके सामग्री भेजी थी।

(ङ) चावरा द्वीप के लोगों ने केनो में मिट्टी के छोटे-छोटे बरतन रख दिए। इसके अलावा बनूई लोई (नारियल से बना खाद्य पदार्थ) भी बाँधकर रख दिया। यह नाव कारनिकोबार के दूसरे तट पर आ लगी।

(च) निकोबारियों ने चावरा द्वीप के लोगों तक पहुँचने के लिए एक बड़ी नाव बनाना शुरू किया। नाव बन जाने पर उसका संतुलन और उसकी भारवहन क्षमता को जाँचना शुरू किया। उसमें बैठकर उसे गति से चलाने का प्रयास किया। जब गति पाने में सफलता नहीं मिली, तब हाथ में लकड़ियाँ लेकर नाव खेने का प्रयास किया। गति का कुछ आभास हुआ तो लकड़ियों को काटकर चप्पू की तरह के आकार में तब्दील कर दिया। अब पूरी नाव तैयार

थी। नाव में खाने का सामान, पीने के लिए पानी और कुछ फल आदि रखे। फिर इस नाकाफ़ी तामझाम के साथ आठ-दस लोग अनजाने द्वीप की यात्रा पर निकल पड़े।

2. (क) (✓) (ख) (✓) (ग) (✗) (घ) (✗) (ङ) (✓)

3. मनुष्य एक जिज्ञासु प्राणी है और इस कारण उसका स्वभाव नई-नई चीज़ों को खोजने और जानने का रहा है। इस गुण के कारण ही खोजों का सिलसिला शुरू हुआ।

4. (क) (ब) (✓) (ख) (अ) (✓) (ग) (स) (✓)
(घ) (अ) (✓) (ङ) (ब) (✓)

भाषा से

1. विचार विमर्श : निकोबारियों ने नाव बनाने के लिए आपस में विचार-विमर्श किया।

नयी-नयी : मनुष्य का स्वभाव नयी-नयी चीज़ों की खोज करने का रहा है।

आकार-प्रकार : निकोबारी छोटे-छोटे बरतनों और उनके आकार-प्रकार देखकर विस्मित थे।

बड़े-बड़े : चावरावासियों ने निकाबारियों को मिट्टी के बड़े-बड़े बरतन उपहार में दिए।

रंग-रूप : निकोबारियों ने पाया कि चावरा के लोगों का रंग-रूप उनके समान ही है।

2. छात्र स्वयं करें।

3. अग्नि - आग दुग्ध - दूध कर्ण - कान
मुख - मुँह द्वार - दरवाज़ा तारक - तारा

4. देशज – मनुष्य, पहली, छीलना
विदेशज – अंदाज़ा, बुज़ुर्ग, तबदील

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

अंडमान निकोबार द्वीप–समूह का एक छोटा किंतु अत्यंत खूबसूरत द्वीप है– चावरा द्वीप। कारनिकोबार इस द्वीप समूह का सर्वाधिक महत्वपूर्ण द्वीप है। कारनिकोबार के निवासियों ने चावरा द्वीप की खोज बड़े रोमांचक तरीके से की थी।

गहन सोच

निकोबारियों को पानी में संतुलन की कला इस प्रकार इसमझ में आयी वो यह कि कुछ लोगों को ध्यान में आया कि जब लकड़ी पानी में गिर जाती है तो वह तैरती रहती है। उन्होंने प्रयोग के तौर पर नारियल का एक पेड़ उखाड़ा। उसे छीलना आरंभ किया। उसे तरह–तरह से काटा उसका आकार छोटा किया। गोलाई कम की फिर उसे पानी में तैराकर देखना शुरू किया इससे उन्हें संतुलन की कला समझ में आई।

2. विषय संवर्धन गतिविधि

छात्र/छात्राएँ इंटरनेट से चावना द्वीप के विषय में जानकारी प्राप्त करें।

3. भारत का ज्ञान

छात्र/छात्राएँ इंटरनेट के माध्यम से दूसरे द्वीपों के बारे में जानकारी प्राप्त करें।

4. जीवन कौशल एवं मूल्य

छात्र/छात्राएँ स्वयं उत्तर दें।

11. मत बाँटो इनसान को

पाठ से

मौखिक

1. (क) मंदिर-मसजिद और गिरजाघर ने भगवान को बाँट लिया।

   (ख) प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से स्पष्ट किया गया है कि प्रकाश महलों में बंदी है।

   (ग) आपस में प्यार न होने पर संसार सूना लगता है।

   (घ) हर द्वार पर सूरज का पहरा होने का अर्थ है कि सूरज का प्रकाश हर घर के द्वार तक पहुँचे।

   (ङ) 'मत बाँटो इनसान को' कविता का मूलभाव पूरी मानव जाति को प्रेम-प्यार, शांति और सद्भाव से रहने का संदेश देती है।

लिखित

   (क) मंदिर-मसजिद-गिरजाघर, धरती और सागर का बँटवारा किया गया है, कवि इनसान को न बाँटने का आह्वान कर रहा है।

   (ख) कवि ऐसा इसलिए कहता है कि पूरी मानव जाति को एक करने के लिए संदेश दिया गया है, लेकिन लोगों ने लगभग हर चीज़ों को बाँट रखा है। इसलिए इनके एक होने की मंज़िल काफ़ी दूर है।

   (ग) सूरज का संदेशा मिलने का यह अर्थ है कि सूरज की किरणें धरती के हर कोने तक पहुँचे।

   (घ) प्यार की ज़रूरत इनसानों को है।

   (ङ) अगर सब कोई साथ उठें और आपसी एकता प्रदर्शित करें तो हर द्वार पर सूरज का पहरा होगा और हर उदास आँगन का खिलती हुई बहार पर अधिकार होगा।

2. (क) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि ने यह स्पष्ट किया है कि इनसानों को एक करने का प्रयास अभी शुरू हुआ है और इन्हें

एक करने की मंज़िल अभी काफी दूर है। सूरज का प्रकाश महलों में बंदी है और महलों में जलने वाले दीपक प्रकाश फैलाने में मजबूर हैं।

(ख) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि यह बताना चाहता है कि अगर सब एक साथ उठें तो हर द्वार पर सूरज का प्रकाश पहुँचेगा और हर उदास आँगन का खिलती हुई बहार पर अधिकार होगा।

3. छात्र स्वयं करें।

4. (क) (स) (✓) (ख) (ब) (✓) (ग) (द) (✓)
(घ) (अ) (✓) (ङ) (ब) (✓)

भाषा से

1.

भगवान	–	प्रभु	ईश्वर	विधाता
राह	–	रास्ता	मार्ग	पथ
इनसान	–	मनुष्य	आदमी	मानव
धरती	–	भूमि	पृथ्वी	वसुंधरा
सागर	–	सिंधु	समुद्र	रत्नाकर

2. राह (तत्सम शब्द) – राह पर चलते हुए पथिक को अभी और चलने दो।

सूरज (तत्सम शब्द) – सूरज का प्रकाश चारों तरफ एक समान फैलता है।

मसजिद (विदेशज शब्द) – मुसलमान मसजिद में नमाज़ अदा करते हैं।

मंज़िल (विदेशज शब्द) – सफर तो अभी शुरू हुआ है, मंज़िल बहुत दूर है।

3. उजियाला – उ + ज + इ + य + आ + ला

वितान – व + इ + त + ा + न + अ

चट्टान – च + अ + ट् + ट + अ + न + अ

प्यार – प् + य + ा + र + अ

संदेश – स + अं + द + ए + श + अ

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

कवि इनसानों को न बाँटने की बात कह रहा है। क्योंकि इनसानों ने तो मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर तथा गुरुद्वारे को बाँट लिया है यहाँ तक कि भगवान तथा धरती को भी बाट दिया गया है।

गहन सोच

इस कविता से हमें ग्रहण करने योग्य यह संदेश मिलता है कि मानव जाति को प्रेम-प्यार, शांति और सद्भाव से रहने का संदेश मिलता है। प्रकृति का हर अंग हमें यही संदेश देता है कि सद्भाव से रहने में ही उनका आनंद और शांति का राज छुपा हुआ है।

2. विषय संवर्धन गतिविधि

इनसान के बँटवारे से कवि का यह तात्पर्य है कि इनसान को मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर तथा गुरुद्वारे के धर्मानुयायियों के माध्यम से बाँटा जा सकता है।

3. मौखिक कौशल

छात्र/छात्राएँ इस कविता को सस्वर गान करके हिंदी अध्यापक/अध्यापिका को सुनाएँ।

4. भारत का ज्ञान

छात्र/छात्राएँ 'भारत की विविधता में एकता' को दर्शाने वाला एक स्लोगन स्वयं तैयार करें।

12. सेर को सवा सेर

पाठ से

मौखिक

1. (क) तानसेन ने यह शर्त रखी थी कि जो मनुष्य गान-विद्या में मेरी बराबरी न कर सके, वह आगरा की सीमा के अंदर न गाए, और यदि उसने ऐसा किया तो वह मृत्युदंड का पात्र समझा जाएगा।

(ख) बैजू के पिता को तानसेन ने मृत्युदंड दिया क्योंकि शर्त के अनुसार तानसेन की बराबरी में वे गान-विद्या में नहीं टिक पाए।

(ग) आगरा की जनता नगर के बाहर बैजू और तानसेन का गान देखने जा रही थी।

(घ) तानसेन को हराने के लिए बैजू बावरा ने शर्त रखी कि फूल-मालाएँ पहने हुए हिरनों को आप दुबारा वापस बुलाइए, तब मैं आपको संगीत विद्या में पूर्ण मानूँ।

लिखित

(क) गायक तानसेन ने यह शर्त रखी थी कि जो मनुष्य गान-विद्या में मेरी बराबरी न कर सके, वह आगरा की सीमा के अंदर न गाए, और यदि उसने ऐसा किया तो वह मृत्युदंड का पात्र समझा जाएगा। साधु आगरा की गलियों में भजन गाते हुए जा रहे थे। शर्त के अनुसार सभी साधुओं को मृत्यु दंड दिया गया क्योंकि गान-विद्या में वे तानसेन की बराबरी नहीं कर पाए। अबोध बालक केवल दस वर्ष का था, इसलिए उसे दोषी न मानते हुए छोड़ दिया गया।

(ख) बैजू बावरा ने प्रण लिया कि मैं जीवनभर विपत्तियाँ उठाऊँगा, कष्ट सहूँगा, भक्ति करूँगा। परंतु वह अस्त्र अवश्य लूँगा जिससे प्रतिहिंसा की अग्नि शांत हो जाए। शंकरानंद ने बैजू को यह आश्वासन दिया कि मैं तुम्हें वह शस्त्र दूँगा जिससे तुम अपने पिता की मृत्यु का बदला ले सको।

(ग) शंकरानंद ने बैजू बावरा से गुरुदक्षिणा में माँगा कि मैंने जो राग-विद्या तुम्हें सिखाया है, उससे तुम किसी को हानि नहीं पहुँचाओगे। ऐसी प्रतिज्ञा के बाद बैजू का रक्त सूख गया और पैर लड़खड़ाने लगे। बैजू ने होंठ काटे, दाँत पीसे और फिर खून का घूँट पीकर रह गया।

(घ) शर्त के अनुसार तानसेन अपने गायन से हिरनों को वापस नहीं बुला पाया और इस प्रकार बैजू बावरा से गान-विद्या में परास्त हो गया।

(ङ) गान-युद्ध में विजयी होने पर बैजू ने अकबर से यह अनुरोध किया कि आप इस निष्ठुर नियम को हटा दीजिए कि जो आगरा की सीमाओं के अंदर गाएगा, यदि तानसेन से हार जाए तो मरवा दिया जाएगा। बैजू ने ऐसा अनुरोध इसलिए किया क्योंकि इसी शर्त के कारण बारह वर्ष पहले बैजू के पिता को प्राणदंड दिया गया था।

2. छात्र स्वयं करें।

3. (क) अनजान व्यक्ति से भी यदि गलती होती है तो उसे अपराध की श्रेणी में माना जाता है।

(ख) अपने पिता को मृत्यु दंड दिए जाने के बाद बालक बैजू गुस्से से पागल हो गया। वह अशांत हो गया। इसलिए उसने कहा कि मेरी शांति जा चुकी है और मुझे अब अपने पिता की प्रतिहिंसा की इच्छा है।

(ग) बैजू बावरा की गायन विद्या जब पूरी हो गई तब उनके गुरु ने बैजू से यह प्रतिज्ञा ली कि तुम इस राग विद्या से किसी को हानि नहीं पहुँचाओगे। बैजू के मन में अपने पिता के मृत्युदंड का बदला लेने की भावना थी जिसे उनके गुरु ने प्रतिज्ञा लेकर समाप्त कर दी।

(घ) बैजू बावरा गान गाता हुआ आगरा की गलियों में जा रहे थे। तानसेन की शर्त के अनुसार सिपाहियों ने बैजू को पकड़कर हथकड़ियाँ पहना दीं। इस प्रकार भक्ति गायन का ताँता टूट गया,

बैजू में जो श्रद्धा के भाव थे, पकड़े जाने के भय से उड़ गए और यह सब देखकर श्रोतागण इधर-उधर भागने लगे।

4. (क) (स) (✓) (ख) (स) (✓) (ग) (अ) (✓)
(घ) (स) (✓) (ङ) (स) (✓)

भाषा से

1. (क) (स) (✓) (ख) (स) (✓)
(ग) (अ) (✓) (घ) (ब) (✓)

2. छात्र स्वयं करें।

3. अज्ञानता – अ + ज + ञ + ा + न + अ + त + ा
दावानल – द + ा + व + अ + ा + न + अ + ल + अ
आश्चर्यमयी – अ + ा + श + च + अ + य + र् + म + अ + य + ई
निश्चल – न + इ + श + च + अ + ल + अ
दक्षिण – द + अ + क + ष + इ + ण + अ
ब्रह्मानंद – ब + र + अ + ह + म + अ + ा + न + अ + न + द + अ

4. छात्र स्वयं करें।

5. (क) मृत्युदंड एवं आकर्षण
(ख) विजय - पराजय एवं मधुर - कटु
(ग) पालन-पोषण
(घ) सिंह + आसन
(ङ) हथकड़ी – हथकड़ियाँ और विद्या
(च) प्रवीणता – प्रवीण, प्र - उपसर्ग, ता - प्रत्यय
आजन्म – जन्म, आ - उपसर्ग
(छ) निष्ठुर – निष्ठुरता
(ज) हाथ – हस्त, कर

6. छात्र स्वयं करें।

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

साधुओं को मृत्युदंड इसलिए मिला क्योंकि तानसेन ने जो अकबर के प्रसिद्ध गवैये थे यह शर्त रखी थी कि–"जो मनुष्य गान-विद्या में मेरी बराबरी न कर सके, वह आगरा की सीमा के अंदर न गाए, और यदि उसने किया तो वह मृत्युदंड का पात्र समझा जाएगा।" बेचारे बनवासी साधुओं को इस बात का पता न था। वे आगरा की सीमा के अंदर हरिभजन गा रहे थे। उन्हें मृत्युदंड मिलना सरासर गलत था क्योंकि वे स्वतंत्र प्रकृति के ईश्वर-भक्त थे और हरिभजन में तल्लीन होकर संसार का परित्याग कर चुके थे। जो संसार को त्याग चुके थे उनको सुर-ताल की क्या परवाह थी।

गहन सोच

तानसेन से गायन प्रतिस्पद्र्धा जीतने पर बैजू बाबरा ने अकबर से कहा– "जहाँपनाह! मुझे प्राण लेने की इच्छा नहीं है। आप इस निष्ठुर नियम को हटा दीजिए कि जो आगरा की सीमाओं के अंदर गाएगा, यदि तानसेन से हार जाए तो मरवा दिया जाएगा।" यह नियम अभी इसी क्षण से खत्म है। तानसेन बैजू बाबरा के चरणों में गिर पड़ा और दीनता से कहने लगा, "यह उपकार जीवन भर न भूलूँगा।"

बैजू बाबरा ने उत्तर दिया, "बारह वर्ष पहले की बात है। तुमने मेरे पिता के प्राण लिए थे, यह उसी का बदला है।

2. रचनात्मक सोच

संगीतों की सूची– 1. भजन, 2. भारतीय फिल्म संगीत, 3. गजल, 4. भारतीय पॉप संगीत, 5. लोक संगीत, 6. चित्रपट संगीत

3. विषय एकीकरण

छात्र/छात्राएँ स्वयं करें कि आपको इस पाठ से क्या संदेश मिलता है।

4. शोधपूरक कौशल

छात्र/छात्राएँ इंटरनेट से संबंधित जानकारी प्राप्त करें।

13. कैसे बनें धनवान

पाठ से

मौखिक

1. (क) निर्धन व्यक्ति अरस्तू के पास यह जानने के लिए आया था कि वह धनवान कैसे बन सकता है।

(ख) हेनरी फोर्ड संसार की सबसे बड़ी मोटर कंपनी का मालिक था।

(ग) जो व्यक्ति अपनी कमाई के खर्चे में कटौती करके उसे मूल पूँजी में मिलाते हैं, वही प्रगति करते हैं।

(घ) संपत्तिशाली बनने के लिए सबसे पहले अपने खर्च यथासंभव सीमित कीजिए। फिर अपनी जमा-पूँजी बढ़ाइए। जब पूँजी बढ़ जाए तो फिर उसको उचित कार्य में लगाइए।

(ङ) मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताएँ हैं—भोजन और कपड़ा।

(च) रॉक फेलर ने अपनी सफलता का रहस्य बताते हुए कहा कि—कोई भी काम करने से पहले मैं उस पर खुद अध्ययन कर लेता हूँ। हड़बड़ाहट या शीघ्रता से काम नहीं करता और न ही कोई ज़ोखिमवाला काम करता हूँ।

लिखित

(क) अरस्तू के बताए तरीके पर चलकर उस व्यक्ति ने पहले फुटपाथ पर टोकरी रखकर फल बेचे। एक आना मुनाफे में से केवल एक पैसे में गुज़ारा करता। तीन-चार माह बाद ठेला लगा लिया। वर्ष भर बाद दुकान कर ली। कई माह बाद फलों का बड़ा व्यापारी

हो गया। जब पैसा आ गया तो और भी व्यवसाय शुरू कर दिए। इस प्रकार वह संपत्तिशाली हो गया।

(ख) मरे हुए चूहे के स्थान पर युवक ने सेठ को सोने का चूहा इसलिए दिया क्योंकि उसी सेठ ने युवक को मरा हुआ चूहा दिया था जिसे बेचकर उसने पैसे जमा किया और व्यापार करने लगा। काफी समय बाद वह एक बड़ा व्यापारी बन गया और एक दिन उसने मरे हुए चूहे के बदले सोने का एक चूहा सेठ को यह कहकर लौटाया कि आपकी उधार दी हुई चीज मैं ब्याज के साथ दे रहा हूँ।

(ग) संपत्ति का अपना एक सिद्धांत है। पहली बात कर्म, कठोर परिश्रम और दूसरी महत्वपूर्ण बात संपत्ति का जमा और खर्च। खर्च की एक सीमा आवश्यक है। रुपये में से केवल एक अंश अर्थात् सौवाँ भाग खर्च और शेष जमा करने पर ही आदमी शनैः-शनैः संपत्तिशाली बनता है।

(घ) लेखक ने कछुए और खरगोश की कथा छोटे-छोटे काम लगातार करते रहने के संदर्भ में उद्धृत किया है। छोटे-छोटे काम मंज़िल पाने में सहायक होते हैं।

(ङ) लेखक के अनुसार संपत्ति प्राप्त करने के लिए कुछ-न-कुछ कुरबानी तो करनी पड़ती है। संसार की कोई भी वस्तु बिना कुरबानी के नहीं मिल सकती। इसलिए लेखक ने कहा कि कुछ पाने के लिए कुछ खोना भी पड़ता है। जब तक हम ऐसा नहीं करेंगे, हम कुछ भी नहीं पा सकेंगे।

(च) कार्लाइल का कथन है, ''मनुष्य का धनवान होना उसके भाग्य पर निर्भर नहीं करता, बल्कि उसके कर्म और सूझ-बूझ पर निर्भर करता है। सूझ-बूझ को ही लोगों ने भाग्य की संज्ञा देकर बहुतों को गुमराह कर रखा है।'' लेखक ने कार्लाइल के इन शब्दों को सोने के अक्षरों में लिखने की बात कहा है। ऐसा इसलिए क्योंकि कर्म और सूझ-बूझ ही मनुष्य को संपत्तिशाली बनाती है। वास्तव में भाग्य नाम की कोई चीज़ नहीं है।

2. धनवान बनने के लिए लेखक ने चार महत्वपूर्ण बिंदुओं का उल्लेख किया है। ये हैं–

(क) दृढ़ संकल्प (ख) अटूट इच्छा–शक्ति

(ग) अनवरत कार्य (घ) निरंतर सतर्कता

3. छात्र स्वयं करें।

4. (क) (ब) (✓) (ख) (द) (✓) (ग) (स) (✓)

भाषा से

1. (क) (द) (✓) (ख) (ब) (✓)

(ग) (अ) (✓) (घ) (स) (✓)

2.

लेखक	–	लेखकगण	मित्र	–	मित्रगण
विद्वान	–	विद्वज्जन	यूनानी	–	यूनानी लोग
दोस्त	–	दोस्तगण	गुरु	–	गुरुजन

4.

संतुष्ट	–	असंतुष्ट	उचित	–	अनुचित
संभव	–	असंभव	आवश्यक	–	अनावश्यक
सफलता	–	असफलता	पढ़	–	अनपढ़

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

युवक सेठ के द्वारा दिए गए मरे चूहे को लेकर सपेरे (मदारी) उससे प्राप्त धन को लेकर चने की दुकान से चना का व्यवसाय करने लगा इस प्रकार वह बहुत पैसा जोड़ लिया। इस प्रकार वह बड़ा व्यापारी बन गया फिर वह सोने का चूहा बनवाकर उसी सेठ के पास गया जिसने

उसे मरा हुआ चूहा दिया था। सेठ खुश होकर अपनी कन्या का विवाह उसके साथ कर दिया।

गहन सोच

हम मेहनत करके ईमानदारी से कोई अच्छा व्यापार करके धनवान बन सकते है। लेकिन धनवान बनने के लिए कोई भी गलत मार्ग अपनाना उचित नहीं है, क्योंकि गलत का परिणाम गलत ही होता है।

2. अनुभव आधारित अधिगम

छात्र/छात्राएँ स्वयं "जीवन में सफल और सुखी कैसे बने।" इसस विषय पर निबंध लिखें।

3. विषय संवर्धन गतिविधि

छात्र/छात्राएँ स्वयं उत्तर दें।

4. चित्र वर्णन

छात्र/छात्राएँ चित्र देखकर 40-45 शब्दों में उसका वर्णन करें।

14. वेनका की चिट्ठी

पाठ से

मौखिक

1. (क) वेनका नौ वर्षीय अनाथ बालक था जो अपने घर से दूर रहकर घरेलू नौकरी करता था।

   (ख) वेनका अपने दादा को चिट्ठी लिखने बैठा।

   (ग) अपने पत्र में वेनका ने मास्को शहर के बारे में बताया कि यह बड़ा शहर है, यहाँ सब प्रतिष्ठित लोगों के घर हैं। फिर भी सब सज्जन और सौम्य नहीं। यहाँ पर किसी को भी समूह-गान में गाने की आज्ञा नहीं है। यहाँ बच्चे वायलिन लेकर दिन भर नहीं घूमते।

   (घ) वेनका अपने दादा जी के साथ क्रिसमस पेड़ लाने जंगल जाता था। तब वहाँ चारों तरफ बरफ होती थी। जब कभी वह बरफ

में लुढ़क जाता तो दादा जी ठहाका लगाकर हँसते थे और फिर लपककर गोद में उठा लेते थे।

(ङ) ओल्गा मालिक की लड़की थी। वह वेनका को खूब मिठाइयाँ खिलाती। उसने वेनका को पढ़ना-लिखना सिखाया था।

(च) घर आकर वेनका गहरी नींद सो गया। सोते हुए उसे सपना आया– चिमनी के पास खड़े उसके दादा अपनी उम्र के बूढ़ों को उसकी चिट्ठी पढ़कर सुना रहे हैं।

लिखित

(क) नौ-वर्षीय वेनका जुकोव दिनभर के काम के बाद भी बैठा इंतज़ार कर रहा था। उसका मालिक आलियाखिन, जो पेशे से मोची था, वह और उसकी पत्नी गिरजाघर में प्रार्थना सुनने जा रहे थे।

(ख) मालिक के जाते ही वेनका ने अलमारी से स्याही की दवात, घिसी निबवाला होल्डर निकाला और कागज को ज़मीन पर फैलाकर लिखने बैठ गया।

(ग) कांस्टेंटाइन वेनका के दादा थे। वे भेड़ की खाल का लंबा कोट पहनते थे। अत्यंत मुस्तैदी से काम करना, कर्मनिष्ठा, बात-बार पर हँसना उनके स्वभाव में शामिल था।

(घ) वेनका को खाने में भरपेट भोजन नहीं मिलता था। वह रात में ठीक से सो नहीं पाता था क्योंकि मालिक का बेटा रातभर सोता रहता था। वेनका भी अन्य बच्चों की तरह स्कूल जाना चाहता था और चाहता था कि उसकी माँ भी उसे स्कूल जाते हुए देखती। इन कारणों से वेनका दादा जी से अपने गाँव वापस बुलाने के लिए कह रहा था।

(ङ) जूतों के बिना वेनका बरफ पर नहीं चल सकता था।

(च) पत्र लिखकर वेनका ने उसे चूमा और धीरे से डाक के डिब्बे में डाल दिया।

2. (क) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से वेनका अपने दादा जी को मास्को शहर के बारे में बता रहा है। उसके अनुसार मास्को बड़ा शहर है,

जहाँ सब प्रतिष्ठित लोगों के घर हैं। फिर भी वहाँ के सब लोग सज्जन और सौम्य नहीं हैं। यहाँ बहुत सारे घोड़े हैं लेकिन भेड़ उसे अब तक नहीं दिखा। वेनका को शहर के बजाय अपना गाँव ज्यादा पसंद था।

(ख) प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से यह स्पष्ट हो रहा है कि अपने समान बच्चों को स्कूल जाते देखकर वेनका को भी स्कूल जाने की इच्छा होती थी। उन बच्चों को स्कूल जाते हुए उनकी माँ दूर तक देखती थी। वेनका की माँ नहीं थी। वेनका ऐसा देखकर चाहता था कि उसकी माँ भी अगर उसे स्कूल जाते देखती तो उसकी कायापलट हो जाती।

3. छात्र स्वयं करें।

4. (क) (स) (✓) (ख) (ब) (✓) (ग) (अ) (✓)
(घ) (स) (✓) (ङ) (ब) (✓)

भाषा से

3. (क) मेरा मालिक भी अपने लाड़ले के लिए चित्रोंवाली कई पुस्तकें लाया है।

(ख) मेरे भी पिता होते जो मुझे स्कूल जाते हुए देखते तो मेरी भी कायापलट हो जाती।

(ग) मेरी प्यारी दादी जी मेरे लिए तो सब कुछ आप ही हैं।

(घ) उसका पति गिरजाघर में प्रार्थना सुनने जाने के लिए तैयार हो रहा था।

(ङ) छोटी-सी दुबली-पतली पैंसठ साल की वृद्धा।

4.

चिट्ठियाँ	–	चिट्ठी	मिठाइयाँ	–	मिठाई
डिब्बा	–	डिब्बे	खिड़की	–	खिड़कियाँ
दरवाज़ा	–	दरवाज़े	किताब	–	किताबें
बस्ता	–	बस्ते	फुहार	–	फुहारें

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

वेनका नौ वर्ष की उम्र में अपने घर से दूर रहकर नौकरी करता है। और मालिकों की यातना सहता है। वह अपने दादा को पत्र लिखकर अपनी वेदना तथा घर लौटने की इच्छा प्रकट करता है।

गहन सोच

वेनका अपने दादा जी से खुद को मॉस्को से लाने के लिए इसलिए लिखता है कि मॉस्को बड़ा शहर है, यहाँ सब प्रतिष्ठित लोगों के घर हैं फिर भी वे सज्जन तथा सौम्य नहीं है। यहाँ बहुत घोड़े है और शायद एक भी भेड़ नहीं। यहाँ पर किसी को भी समूह-गान में गाना गाने की आज्ञा नहीं है। यहाँ बच्चे वायलिन लेकर दिनभर नहीं घूमते हैं।

खाने को सुबह-शाम थोड़ी-सी रोटी मिलती है। रातभर मालिक का बेटा रोता है। वह मुझे सोने नहीं देता। मुझे बार-बार उसका पालना हिलाना पड़ता है। मेरे प्यारे दादा जी! आप मुझे यहाँ से ले जाइए।

2. संचार

छात्र/छात्राएँ अपने मित्रों के साथ चर्चा करें।

3. अनुभव आधारित अधिगम

छात्र/छात्राएँ स्वयं उत्तर दें।

4. कला समेकन

छात्र/छात्राएँ पोस्ट ऑफिस के लाल डिब्बे का चित्र स्वयं बनाकर उचित रंग भरें।

15. एलबम

पाठ से

मौखिक

1. (क) जमा किए हुए पैसे जब खर्च होते थे तब शादीराम के हृदय पर बरछियाँ चल जाती थीं।

   (ख) लाला सदानंद अपने पुरोहित की विवशता को जानते थे।

   (ग) पंडित शादीराम पुरानी पत्रिकाओं का इस्तेमाल उनसे निकाले गए रंगीन चित्रों का एलबम बनाने के लिए करते थे।

   (घ) पंडित शादीराम डाकिए की प्रतीक्षा करते रहते थे। डाकिये की प्रतीक्षा वे इसलिए करते थे क्योंकि उन्हें अपने विज्ञापन के जवाब की प्रतीक्षा रहती थी।

   (ङ) बीमा मिलने के बाद पंडित शादीराम लाला सदानंद के पास बीमा से मिले उनके हिस्से का पैसा देने गए।

लिखित

(क) पं. शादीराम ने पैसा-पैसा बचाकर अस्सी रुपए जोड़ लिए। उनका लड़का लगातार चार महीने बीमार रहा। पैसा-पैसा करके बचाए हुए रुपये दवा में उड़ गए।

(ख) लाला सदानंद ने पुरानी पत्रिकाओं के चित्र देखकर पंडित जी से कहा, ''ये चित्रकला के बढ़िया नमूने हैं। अगर किसी शौकीन को पसंद आ जाएँ, तो हज़ार-दो हज़ार रुपये बड़ी आसानी से कमा सकते हैं।''

(ग) लाला जी ने पंडित जी को पत्रिकाओं के अच्छे-अच्छे चित्र छाँटने के लिए इसलिए कहा क्योंकि वे इन चित्रों से एलबम बनाना चाहते थे और पंडित जी की तरफ से विज्ञापन देना चाहते थे। उनका यह मानना था कि यह विज्ञापन किसी शौकीन के हाथ पड़ जाए तो दो-चार पैसे की कमाई हो जाएगी।

(घ) आखिर एक दिन शादीराम के भाग्य जागे और कोलकाता से एक मारवाड़ी सेठ ने पत्र लिखा कि चित्रों वाला एलबम भेज दो। अगर पसंद आ गया, तो खरीद लिया जाएगा।

(ङ) लाला सदानंद पंडित जी को उधार दिए हुए रुपए वापस नहीं लेना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने कहा कि, मेरा विचार है कि आप ये रुपये अपने पास ही रखें। मैं आपका यजमान हूँ। मेरा धर्म है कि आपकी सेवा करूँ। अगर मैंने चार पैसे दे दिए तो कौन-सा गज़ब हो गया।

(च) पंडित शादीराम इस विचार से बहुत प्रसन्न थे कि उन्होंने सदानंद का ऋण उतार दिया है। मगर यह जानकर उनके हृदय को चोट-सी लगी कि ऋण उतरा नहीं बल्कि पहले से दुगुना हो गया है।

2. (क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✓) (घ) (✓) (ङ) (✓)

3. छात्र स्वयं करें।

4. (क) (स) (✓) (ख) (ब) (✓) (ग) (अ) (✓)
(घ) (स) (✓) (ङ) (ब) (✓)

भाषा से

1. एकता : देश की एकता सर्वोपरि है।
ममता : माँ की ममता सुखकारी है।
मानवता : मानवता से बड़ा धर्म और कोई नहीं है।
जनता : राज्य की जनता सुखी है।
लघुता : पहाड़ी क्षेत्र में लघुता मात्रा में खनिज-भंडार है।

2. पूर्ण × अपूर्ण सफलता × असफलता धर्म × अधर्म
समय × असमय प्रसन्न × अप्रसन्न

3. (क) <u>लाला सदानंद</u> अपने पुरोहित की विवशता को जानते थे।
(ख) <u>बच्चों</u> का दिल बहल जाता है।

(ग) मैं उनकी एलबम बनाऊँगा और आपकी तरफ से विज्ञापन दे दूँगा।

(घ) परमात्मा का धन्यवाद है कि मुझे इस भार से छुटकारा मिल गया।

(ङ) आपने जो दया और सज्जनता दिखाई है, उसे मैं मरते दम तक न भूलूँगा।

4. (क) कंजूसी करके धन जमा करना।

(ख) चैन लेना।

(ग) चोट पहुचाना।

(घ) चक्कर काटना।

(ङ) शर्म से पानी-पानी होना।

(च) मजा बेकार करना।

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

पंडित शादीराम लाला सदानंद के पैसे वापस इसलिए नहीं कर पाते थे क्योंकि वे अपना पेट काटकर बचाते थे, मगर जब चार पैसे जमा हो जाते थे तो कोई-न-कोई खर्च निकल आता था, जिससे सारा रुपया उड़ जाता था। शादीराम के हृदय पर बरछियाँ चल जाती थी। मगर वे कुछ न कर सकते है।

गहन सोच

लाला सदानंद जी के चरित्र की विशेषता है उनकी सहृदयता। सेठ जी उदारमना है जो सहायता तो करते हैं, किंतु सहायता पाने वाले को एहसान के बोझ तले दबाना नहीं चाहते हैं। ऐसे देवता स्वरूप लोग दुनिया में कम ही होते हैं।

2. विषय संवर्धन गतिविधि

छात्र/छात्राएँ सुदर्शन जी की अन्य रचनाएँ पढ़कर इस रचना के साथ तुलनात्मक विश्लेषण करें।

3. कला समेकन

छात्र/छात्राएँ अपना खुद का एलबम बनाएँ जिसमें चित्र भी आपके स्वयं बनाए हों।

4. संचार

छात्र/छात्राएँ कक्षा में इस विषय पर चर्चा करें।

16. दोहे

पाठ से

मौखिक

1. (क) इस पाठ में कबीर, वृंद और गिरधर की रचनाएँ दी गई हैं।

(ख) कबीरदास ने सुख के समय में भी ईश्वर स्मरण करने के लिए कहा है। इससे दुख दूर हो जाते हैं।

(ग) काठ की हाँडी चूल्हे पर बार-बार इसलिए नहीं चढ़ाई जा सकती क्योंकि उसके जल जाने का खतरा रहता है।

(घ) गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौ पाँय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।

(ङ) दौलत पाकर सपने में भी अभिमान नहीं करना चाहिए।

(च) बिना बिचारे काम करने पर बाद में पछताना होता है।

लिखित

(क) तिनके के माध्यम से कवि यह कहना चाह रहे हैं कि तिनके की हमें निंदा नहीं करनी चाहिए क्योंकि कभी यह पैरों के नीचे होता है तो कभी उड़कर आँखों में पड़ जाता है, जिससे आँखों में पीड़ा होती है। लेकिन इसमें तिनके का कोई दोष नहीं होता।

(ख) माला फेरना व्यर्थ इसलिए बताया गया है क्योंकि माला फेरते समय मनुष्य का मन चारों दिशाओं में चंचल रहता है। संबंधित दोहा–

माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख माँहि।

मनुवा तो चहुँ दिसि फिरै, यह तो सुमिरन नाँहि।

(ग) गुरु की महत्ता में कबीर जी कह रहे हैं कि यदि गुरु और भगवान एक साथ खड़े हों तो ऐसी स्थिति में गुरु के श्रीचरणों में शीश झुकाना उत्तम है जिनके कृपा रूपी प्रसाद से भगवान के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

(घ) तन को विष की बेल इसलिए कहा गया है क्योंकि इस तन पर ही विषय वासनाओं के काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार, राग-द्वेष, ईर्ष्या और तृष्णारूपी कई विषैले फल लगते हैं जिनके सेवन करने से जीव हमेशा दुखी, परेशान और विपदाओं से घिरा रहता है।

(ङ) नैना देत बताय सब, हिय को हेत अहेत।

जैसे निरमल आरसी, भली बुरी कहि देत।।

(च) 'साईं' या संसार में मतलब को व्यवहार'–यहाँ 'मतलब' का आशय स्वार्थ से है।

(छ) दौलत तथा पानी की ज़रूरत सभी को हाती है। इससे संबंधित दोहा–

साईं या संसार में, मतलब को व्यवहार।

जब लगि पैसा पास में, तब लगि ताक्यो यार।।

तब लगि ताक्यो यार, यार संग ही संग डोलै।

पैसा रहै न पास, यार मुख से नहिं बोलैं।।

अर्थात इस संसार में लोग स्वार्थ के कारण ही व्यवहार रखते हैं। जब आपके पास धन है तो सभी आपसे संबंध रखते हैं और सदा आपके साथ ही समय बिताते हैं। परंतु जब धन समाप्त हो जाए तो ऐसे स्वार्थी लोग आपसे बात भी करना उचित नहीं समझते हैं।

(ज) कवि के अनुसार बिरला लाखों-हजारों में कोई एक होता है जो बिना निहित स्वार्थ के लोगों से प्रेम करता है।

2. (क) नैना देत बताय सब, हित को हेत अहेत।

(ख) सीस दिए जो गुरु मिलै, तो भी सस्ता जान।

(ग) दुख में सुमिरन सब करै, सुख में करै न कोय।

(घ) साईं या संसार में, मतलब को व्यवहार।

3. (क) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया गया है कि हमें किसी भी कार्य को प्रारंभ करने से पूर्व ठीक तरह से विचार कर लेना चाहिए अन्यथा कार्य की असफलता पर अंत में पछताना पड़ता है और संसार में बदनामी भी होती है। ऐसी स्थिति में मन में चैन भी नहीं रहता, खान-पान, सम्मान, राग इत्यादि में भी मन नहीं भाता। कवि गिरधर का मानना है कि बिना विचारे कार्य करने से जो दुख उत्पन्न होता है उसे टाला भी नहीं जा सकता। हर पल दिल में यह पछतावा होता रहता है कि बिना विचारे कार्य क्यों आरंभ किया।

(ख) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि वृंद का यह कहना है कि लोग अपने गुणों को ही देखते हैं, दोष को नहीं। दीप गुणों को उज्जवलित करता है लेकिन उस दीप के नीचे ही अँधेरा होता है।

(ग) प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि कबीर का कहना है कि सज्जन व्यक्ति की जाति न पूछकर उसके ज्ञान को समझना चाहिए। तलवार का मूल्य होता है न कि उसकी म्यान का।

4. (क) (ब) (✓) (ख) (अ) (✓)

भाषा से

1.

ग्यान	=	ज्ञान	रहत	=	रहना
तर	=	नीचे	करत	=	करना
बलिहारी	=	वार देना	काज	=	कार्य
पाछे	=	पीछे	सीस	=	शीष

2.

विष	–	अमृत	चाह	–	अनिच्छा
इष्ट	–	अनिष्ट	नश्वर	–	अनश्वर

कृपा	–	कोप	लुप्त	–	प्रकट
गुरु	–	शिष्य	सगुण	–	निर्गुण

4. छात्र स्वयं करें।

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

कबीरदास द्वारा दुख दूर करने का यह उपाय बताया है कि– लोग दुख में तो भगवान को स्मरण करते है लेकिन सुख आने पर कोई भी भगवान का स्मरण नहीं करते है, बल्कि वे भगवान को भूल जाते है। लोग यदि सुख में भगवान को याद करते रहे तो उन्हें दुख कभी होगा ही नहीं।

गहन सोच

दौलत पाने पर स्वप्न में भी कभी अभिमान नहीं करना चाहिए क्योंकि लक्ष्मी तो चंचला होती है इसका स्थायी रूप से रहना मुश्किल है।

2. बहुविकल्पीय प्रश्न

(क) (अ) (✓) (ख) (स) (✓)

3. संचार

छात्र/छात्राएँ इस पाठ से मिलने वाली सीख की चर्चा मित्रों के साथ करें।

17. धरती का सुरक्षा कवच

पाठ से

मौखिक

1. (क) यह पत्र दादा ने अपनी पौत्री को लिखा है।

(ख) पृथ्वी के चारों ओर रज़ाई की तरह लिपटी परत को वायुमंडल कहते हैं।

(ग) ओज़ोन वायुमंडल की समतापमंडल (स्ट्रेटोस्फियर) परत में पाई जाती है। यह परत पृथ्वी से करीब 15 से 40 किलोमीटर की ऊँचाई पर है।

(घ) सूर्य से पृथ्वी की ओर जो प्रकाश आता है, उसमें बड़ी तेज़ पराबैंगनी यानी अल्ट्रावायलेट किरणें होती हैं। ये किरणें अगर सीधी पृथ्वी पर पहुँच जाएँ तो उनसे मनुष्य, जीव-जंतुओं और पेड़-पौधों का जीवन खतरे में पड़ सकता है।

(ङ) वैज्ञानिक ओजोन की परत को बचाने के लिए कई सालों से चेतावनी दे रहे हैं। यह परत कमज़ोर पड़ रही है। ओज़ोन परत में क्षरण के कारण तेज़ पराबैंगनी किरणें पृथ्वी पर पड़ेंगी। इससे लोगों को चमड़ी का कैंसर हो सकता है और शरीर गल सकता है।

लिखित

(क) पल्लवी का पत्र पढ़कर दादा जी को हर्ष इसलिए हुआ क्योंकि पल्लवी में नयी चीज़ों को सीखने और नयी बातों को जानने की उत्सुकता है। दादा जी अपनी पोती के जिज्ञासा भरे पत्र इसलिए पढ़ना चाहते थे क्योंकि उन्हें पढ़कर वे अपने बचपन के दिन याद करते थे जब वे भी अपनी पोती की तरह चीजों के बारे में जानना चाहते थे।

(ख) वायुमंडल में मुख्य रूप से दो गैसें होती हैं—नाइट्रोजन और ऑक्सीजन। इनमें से नाइट्रोजन लगभग 78 प्रतिशत और ऑक्सीजन 21 प्रतिशत होती है। शेष एक प्रतिशत में बहुत ही कम मात्रा

में आर्गन, कार्बन डाई-ऑक्साइड, हाइड्रोजन, नियॉन, हीलियम, क्रिप्टॉन, ज़ेनॉन, और ओज़ोन नामक गैसें पाई जाती हैं।

(ग) वायुमंडल में कुल पाँच परतें हैं। ये हैं—क्षोभमंडल या ट्रोपोस्फियर (पृथ्वी की सतह से 10 किमी. ऊपर तक), समतापमंडल या स्ट्रेटोस्फियर, जिसमें ओज़ोन गैस पाई जाती है। मध्यमंडल या मीज़ोस्फियर (पृथ्वी की सतह से 10 से 50 किमी तक), समतापमंडल या थर्मोस्फियर (पृथ्वी की सतह से 50 से 85 किमी. तक), तथा बहिर्मंडल या एक्ज़ोंस्फियर (85 से 600 किमी. तक)।

(घ) सुबह-सुबह वायुमंडल की मोटी परतों को पार करके हमारी धरती तक जो पराबैंगनी किरणें पहुँचती हैं, वे हलकी होती हैं और शरीर को लाभ पहुँचाती हैं। तेज़ पराबैंगनी किरणों को तो ओज़ोन की परत समतापमंडल में ऊपर ही रोक लेती हैं, इसलिए ओज़ोन की इस परत को सुरक्षा-कवच कहते हैं।

(ङ) ओज़ोन की परत को कमज़ोर करने वाले रसायनों को क्लोरोफ्लोरोकार्बन कहते हैं। इनके अलावा खेतों में जो रासायनिक उर्वरक डालते हैं, उनसे निकलने वाली नाइट्रोजन ऑक्साइड और हवाई जहाज़ों से निकलनेवाले गैसों का धुआँ भी ओज़ोन की परत को नुकसान पहुँचाते हैं।

(च) ओज़ोन के सुरक्षा-कवच को मज़बूत बनाने के लिए हमें क्लोरोफ्लोरोकार्बन तथा अन्य नुकसान पहुँचाने वाले रसायनों का कम-से-कम प्रयोग करना होगा।

2. (क) (✓) (ख) (✓) (ग) (✗)
(घ) (✗) (ङ) (✗) (च) (✓)

3. छात्र स्वयं करें।

4. (क) (ब) (✓) (ख) (द) (✓) (ग) (द) (✓)
(घ) (अ) (✓) (ङ) (द) (✓)

भाषा से

1.	हर्ष	–	खेद	असीम	–	सीमित	नए	– पुराने
	विरल	–	घना	मज़बूत	–	कमज़ोर	नुकसान	– लाभ
	दुश्मन	–	मित्र	सवाल	–	जवाब	रुचि	– घृणा
2.	चीज	–	चीज़	जरूर	–	ज़रूर	कमजोर	– कमज़ोर
	ओजोन	–	ओज़ोन	सफाई	–	सफ़ाई	रजाई	– रज़ाई

3. छात्र स्वयं करें।
4. छात्र स्वयं करें।

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

इस पत्र में वायुमंडल तथा ओजोन परत की महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई है। इस पाठ में बताया गया है कि कमजोर पड़ती ओजोन परत को मजबूत करना परम आवश्यक है। इसी में समस्त वनस्पति जगत का कल्याण निहित है।

गहन सोच

ओजोन को पृथ्वी का सुरक्षा-कवच इसलिए कहते है क्योंकि ओजोन की परत में छेद हो रहा है। वह कमजोर पड़ रही है। जोकि चिंतनीय विषय है।

सूर्य से पृथ्वी की ओर जो प्रकाश आता है, उसमें बड़ी तेज पराबैंगनी यानी अल्ट्रावायलेट किरणें भी होती है। वे अगर सीधी पृथ्वी पर पहुँच जाएँ तो उससे मनुष्य, जीत-जंतुओं और पेड़-पौधों का जीवन खतरे में पड़ सकता है।

2. कला समेकन

छात्र/छात्राएँ "ओजोन पृथ्वी का सुरक्षा कवच" विषय पर एक रंगीन चित्र बनाकर अपने अध्यापक/अध्यापिका को दिखाएँ।

3. अनुभव आधारित अधिगम

सूर्य की प्रखर किरणों से होने वाले लाभ– सुबह-सुबह सूरज की धूप सेकनी चाहिए। इससे हमारे शरीर में विटामिन 'डी' बनाता है, और हड्डियाँ मजबूत होती है। सुबह-सुबह वायुमंडल की मोटी परतों को पार करके हमारी धरती तक जो पराबैंगनी किरणें पहुँचती हैं, वे हल्की होती है, और शरीर को लाभ पहुँचाती हैं।

हानि– प्रचंड पराबैंगनी किरणें अगर सीधी धरती पर आ जाएँ तो जीव-जंतु तड़पकर मर जाएँगे। और पेड़-पौधे सूख जाएँगे। उनसे धरती पर जीवन नष्ट हो जाएगा, वैज्ञानिक कई साल से चेतावनी दे रहे है कि ओजोन की परत में छेद हो रहा है। यह परत कमजोर पड़ रही है। ओजोन परत में क्षरण के कारण तेज़ बैंगनी किरणें पृथ्वी पर पड़ेंगी। उनसे लोगों को चमड़ी का कैंसर हो सकता है, शरीर गल सकता है।

18. लालू

पाठ से

मौखिक

1. (क) लालू में स्कूल के टूटे छाते ठीक करने, स्लेट की मढ़ाई करने, फटे कुरते को सिलने का गुण था।

   (ख) बलि का बकरा काटने के लिए लालू को इसलिए बुलाया गया क्योंकि बलि देने वाला व्यक्ति बीमार था।

   (ग) बलि के लिए बकरे को तैयार किया गया–माथे पर सिंदूर लगाकर गले में माला पहनाई गई।

   (घ) और बकरों की बलि देने के लिए लालू ज़ोर से मनोहर चट्टोपाध्याय और पुरोहित को पुकार रहा था।

(ङ) चट्टोपाध्याय महाशय ने लालू को पिटवाने की बात इसलिए कही क्योंकि वह उनके साथ शैतानी कर रहा था।

लिखित

(क) लालू सब तरह के कामों का मिस्तरी था। जैसे-स्कूल के टूटे छाते ठीक करना, स्लेट की मढ़ाई करना, फटे कुरते को सिलना आदि।

(ख) लालू में एक बड़ा दोष था। वह दूसरों को डराने का कोई अवसर हाथ से न जाने देता। बड़ा हो या छोटा, सबको अलग-अलग तरीके से डराता।

(ग) बलि के लिये बुलाए जाने पर लालू इसलिये इनकार कर रहा था क्योंकि बलि देने का काम उसने बचपन में ही किया था।

(घ) बकरों की बलि चढ़ाने के बाद लालू वहाँ खड़े लोगों को डराने के लिये किसी और की बलि चढ़ाना चाहता था।,

(ङ) लालू ने जब चट्टोपाध्याय को बलि चढ़ाने के लिये पकड़ लिया तब वे डर के मारे थर-थर काँपने लगे। अपने बचाव में उन्होंने कहा कि-मैं बकरा नहीं, आदमी हूँ। मैं तो तुम्हारा ताऊ हूँ।

2. (क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✓)
(घ) (✓) (ङ) (✗)

3. छात्र स्वयं करें।

4. (क) (ब) (✓) (ख) (स) (✓) (ग) (अ) (✓)
(घ) (द) (✓) (ङ) (अ) (✓)

भाषा से

1.

असाधारण	–	साधारण	बीमार	–	स्वस्थ
प्रसन्न	–	दुखी	दोष	–	गुण
शांत	–	अशांत	सामने	–	पीछे

2.

चारों	–	आर्तनाद	प्रसन्न	ट्रक
ज़ोर	–	अर्पण	प्रणाम	ड्राईवर

3. छात्र स्वयं करें

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

बकरे की बलि चढ़ाने के लिए लालू को इसलिए बुलाया गया क्योंकि मनोहर चट्टोपाध्याय के यहाँ काली पूजा होनेवाली थी।

गहन सोच

लालू ने बलि की प्रथा को समाप्त (खत्म) करने के लिए एक नाटक किया, वो यह कि वह जब दो बकरी की बलि चढ़ा चुका तो उसने (लालू ने) खड्ग को सिर पर घुमाया और आँख लाल-लाल करके बोला, "बकरा नहीं है। यह नहीं हो सकता। जय माँ काली! अब तो मैं किसी और की बलि जरूर चढ़ाऊँगा। वह कूदकर बलिवेदी पर चढ़ा। जमीन पर पड़ी माला उठाई और खड्ग को गोल-गोल घुमाते हुए बोला, "अब तो मैं जिसे पकड़ लूँगा, उसे ही बलि चढ़ाऊँगा। मैं तो माँ को अवश्य प्रसन्न करूँगा।"

लालू से अंततः मनोहर ने माँफी माँगी तथा कहा कि– अब देवी के सामने शपथ ली है। अब मेरे घर काली पूजा में कभी बलि न दी जाएगी।

2. जीवन कौशल एवं मूल्य

छात्र/छात्राएँ स्वयं उत्तर दें।

3. शोधपूरक कौशल

छात्र/छात्राएँ शरतचंद चट्टोपाध्याय के बारे में इंटरनेट से जानकारी प्राप्त कर पढ़ें।

19. मेरी यूरोप यात्रा

पाठ से

मौखिक

1. (क) पाठ में लेखक डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की यूरोप यात्रा का वर्णन है। कपड़ों के बारे में उनका विचार था कि कपड़े शरीर गर्म रखने और लज्जा-निवारण का साधनमात्र ही है।

(ख) जहाज के स्वेज नहर से गुजरते समय थॉमस कुक कंपनी की ओर से ऐसा प्रबंध रहता है कि जो यात्री चाहे वह मोटरगाड़ी द्वारा जाकर कैरो नगर देखकर आ सकता है।

(ग) लेखक अजायबघर के सफर से उदास इसलिये निकले क्योंकि उनके दिल पर क्षणभंगुर जीवन की सच्चाई का गहरा प्रभाव पड़ा।

(घ) दिन-रात पानी देखते-देखते जहाज के यात्रियों को एक-दो दिनों के बाद आनंद का अनुभव होता है।

(ङ) लेखक लंदन से स्विट्जरलैंड गये। वहाँ वे कार्टरिगी पहाड़ी पर जाकर रोमाँ रोलाँ से मिले।

(च) लुई कोहने प्रसिद्ध जल-चिकित्सक थे। लेखक उनसे इसलिये नहीं मिल पाये क्योंकि उनके वहाँ पहुँचने से पहले ही उनकी मृत्यु हो चुकी थी।

लिखित

(क) अपनी पहली यूरोप यात्रा के समय लेखक ने सर्दी के लिये गर्म कपड़े बनवाये। वे बराबर खादी ही पहना करते थे इसलिये कश्मीरी ऊन के कपड़े ही खादी भंडार से मँगवाकर बनवाये। कपड़े की काट-छाँट भी देशी रखी।

(ख) लेखक ने कैरो के अजायबघर में पिरामिडों की खुदाई से निकली वस्तुएँ देखा। वहाँ पिरामिडों की खुदाई से निकली वस्तुएँ अब तक सुरक्षित रखी हैं। प्राचीन मिस्त्र के कितने ही बड़े नामी और प्रतापी बादशाहों के शव, जो पिरामिडों से निकले हैं, वहाँ सुरक्षित रखे हैं।

अब देखने में वे काले पड़ गये हैं, पर उनके चेहरे और हाथ–पैर सुरक्षित हैं। पिरामिडों के अंदर शव के साथ सभी आवश्यक वस्तुएँ गाड़ी जाती थीं।

(ग) पिरामिडों के अंदर शव के साथ सभी आवश्यक वस्तुएँ गाड़ी जाती थीं। इनमें पहनने के कपड़े और गहने, बैठने के लिये चौकी, खाने के लिये अन्न, श्रृंगार के सामान, सवारी के लिये नाव और रथ तक रखे जाते थे। उन दिनों वहाँ के निवासियों का विश्वास था कि आराम के सभी सामान यदि निर्जीव शरीर के साथ गाड़ दिये जायें तो परलोक में भी उनसे वह आराम पा सकता है। इसी विश्वास के साथ पिरामिडों के अंदर शव के साथ सभी आवश्यक वस्तुएँ गाड़ी जाती थीं।

(घ) पिरामिडों की संरचना चौखूँटी इमारत के समान है। हमारे देश में ईंटों के भट्ठे जैसे बने होते हैं, वैसे ही ये पत्थरों के बहुत बड़े–बड़े चौरस टुकड़ों में बने हैं। भट्ठे की तरह ही नीचे की चौड़ाई ज्यादा हैं, जो ऊपर की ओर कम होती गई है। ईंटों का भट्ठा छोटा होता है, पर पिरामिड बहुत बड़े और ऊँचे हैं।

(ङ) लेखक रोमाँ रोलाँ से मिलने स्विट्जरलैंड गये। लेखक फ्रांसीसी नहीं जानते थे और रोमाँ रोलाँ अंग्रेजी नहीं जानते थे, इसलिये उनसे बातचीत करने के लिये दुभाषिए की मदद लेनी पड़ी।

(च) न्यूटाटेल में लेखक के साथ एक आश्चर्यजनक घटना हुई। लेखक वहाँ बाजार में घूम रहे थे। वे वहाँ एक दुकान में हाथ के बुने कपड़े देखने लगे। दुकानदार महिला थी। उसने लेखक के कपड़ों को देखा और समझ लिया कि वे हिंदुस्तानी हैं। उस महिला ने गाँधी जी के बारे में बताया। लेखक को आश्चर्य हुआ कि वह न केवल गाँधी जी का नाम जानती थी, बल्कि उनके संबंध में जो ग्रंथ उसे मिल सके, उन्हें वह पढ़ गई थी।

2. छात्र स्वयं करें।

3. छात्र स्वयं करें।

4. (क) (ब) (✓) (ख) (ब) (✓) (ग) (अ) (✓)
(घ) (स) (✓) (ङ) (अ) (✓)

भाषा से

1. ज्ञात – अज्ञात विशेष – साधारण
सुरक्षित – असुरक्षित विदेश – स्वदेश
उचित – अनुचित उदास – प्रसन्न
संध्या – प्रातः सुंदर – कुरुप
बारीक – मोटा

2. आदमी – मनुष्य जहाज – बेड़ा
बादशाह – सम्राट आसानी – सरल
सामान – वस्तु सफर – यात्रा
ज्यादा – अधिक शहर – नगर
जमीन – धरती

3. पूर्व – एक दिशा, पहले काम – क्रिया, कर्म
मद – विषय, घमंड कर – हाथ, टैक्स
सोना – एक मुद्रा, सोना पर – पंख, पराया

4. हर्ष – हर्षित योग – योगी गर्व – गर्वित
देश – देशी पंक – पंकज सुख – सुखी
जाति – जातिगत स्वर्ण – स्वर्णिम बाज़ार – बाज़ारू

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

लेखक की यह पहली विदेश यात्रा थी। मित्रों के परामर्श से सर्दी के लिए गरम कपड़े बनवाए। लेखक केवल खादी ही पहनते थे। वे वहाँ जाकर भी इस नियम को भंग करना उचित नहीं समझा। उन्होंने कश्मीरी उनके कपड़े ही खादी भंडार से मँगवाकर बनवाए। कपड़े की काट-छाँट भी देशी ही रखी। अंग्रेजी पोशाक न पहनने का निश्चय कर लिया।

गहन सोच

लेखक लुई कोहने से इसलिए नहीं मिल पाए क्योंकि लेखक के पहुँचने से पूर्व उनकी मृत्यु हो चुकी थी।

2. विषय संवर्धन गतिविधि

छात्र/छात्राएँ अंग्रेजी पोशाक और रहन-सहन भारतीय पोशाक और रहन-सहन से किस प्रकार अलग है। इंटरनेट से जानकारी प्राप्त करें।

3. शोधपूरक कौशल

छात्र/छात्राएँ इंटरनेट से डॉ. राजेंद्र प्रसाद के विषय में जानकारी प्राप्त करें।

20. राखी का मूल्य

पाठ से

मौखिक

1. (क) कर्मवती मेवाड़ की रानी थी। उसने बादशाह हुमायूँ को राखी भेजने का निश्चय किया।

   (ख) बाघसिंह ने राखी भेजने में बाधाएँ बताई कि क्या बादशाह हुमायूँ पुराने बैर भुला सकेगा? सीकरी के युद्ध के जख्मों के निशान क्या आसानी से मिट सकेंगे?

(ग) हुमायूँ ने राणा साँगा और मेवाड़ के राजपूतों की प्रशंसा में कहा कि मेवाड़ लफ्ज में ही जादू है। बयाना और सीकरी की लड़ाइयों में राजपूतों से हमारी फौज खौफ खाती थी। राणा साँगा को तो खुदा ने फौलाद से बनाया है। उनकी तिरछी नजर कयामत का पैगाम थी।

(घ) हुमायूँ ने कहा कि यह तो मेरी खुशकिस्मती है कि मेवाड़ की बहादुर रानी ने मुझे अपना भाई बनाया।

(ङ) हुमायूँ के अनुसार हिंदुस्तान का इतिहास गवाह है कि राखी के धागों ने हजारों कुर्बानियाँ कराई हैं।

(च) हिंदू बेग ने हुमायूँ को अवगत कराया कि जब हम स्वयं युद्ध के मैदान में दुश्मनों के सामने डटे हैं, ऐसे विकट समय में शेर खाँ को खुला छोड़कर मेवाड़ की तरफ लौट जाना सल्तनत और दिल्ली के लिए खतरे से खाली नहीं है।

लिखित

(क) बाघसिंह ने रानी कर्मवती से कहा कि हम मरकर भी मेवाड़ की आन की रक्षा नहीं कर पाएँगे क्योंकि हमारे सैनिकों की संख्या बहुत कम है, दूसरे शत्रुओं का यूरोपियन तोपखाना आग उगल रहा है। उसका मुकाबला तलवारों से तो नहीं हो सकता।

(ख) कर्मवती ने एक मुसलमान को अपना भाई बनाने के पक्ष में यह कहा कि वे भी तो इनसान हैं, उनके भी तो बहिनें होती हैं, उन्हें भी हृदय होता है। वे ईश्वर को खुदा कहते हैं और मसज़िद भी जाते हैं।

(ग) मेवाड़ के दूत ने हुमायूँ से कहा कि स्वर्गीय महाराणा साँगा की महारानी कर्मवती ने आपको यह सौगात भेजी है। इसके जवाब में हुमायूँ ने कहा कि यह मेरी किस्मत है। मैं मेवाड़ की बहुत इज़्ज़त करता हूँ, जो एक बहादुर को करनी चाहिए। वहाँ की खाक भी सिर पर लगाने की चीज़ है।

(घ) महारानी कर्मवती द्वारा भेजे गए सौगात को हुमायूँ ने जादू का पिटारा कहा। इसका वर्णन करते हुए हुमायूँ ने कहा कि मेरे सूने आसमान में रानी कर्मवती ने मुहब्बत का चाँद चमकाया है। मुझे बहिन मिल गई है। उन्होंने मुझे राखी भेजकर अपना भाई बनाया है।

(ङ) हुमायूँ ने सेनापति के समक्ष बहिन के रिश्ते के बारे में कहा कि बहिन का रिश्ता दुनिया के सारे सुखों, दौलतों, ताकतों और सल्तनतों से बढ़कर है। मैं इस रिश्ते की इज़्ज़त सल्तनत कुर्बान करके भी रखूँगा।

2.

	किसने कहा?	**किससे कहा?**
(क)	बाघसिंह	कर्मवती
(ख)	कर्मवती	बाघसिंह
(ग)	बाघसिंह	कर्मवती
(घ)	जवाहरबाई	कर्मवती
(ङ)	हुमायूँ	हिंदू बेग

3. छात्र स्वयं करें।

4. (क) (ब) (✓) (ख) (अ) (✓) (ग) (स) (✓)
(घ) (ब) (✓) (ङ) (ब) (✓)

भाषा से

1.

भाई	– बहन	राजपूतानी	– राजपूत	स्वामी	– स्वामिनी
औरत	– मर्द	बादशाह	– बेगम	महारानी	– महाराजा

2.

ताकत	– शक्ति	दौलत	– धन	दुनिया	– संसार
फौज	– सेना	तख्त	– सिंहासन	इनसान	– आदमी
हुक्म	– आदेश	कीमत	– मूल्य	पाक	– पवित्र

3. छात्र स्वयं करें।

4. छात्र स्वयं करें।

5. त्व	–	पितृत्व	महत्व	भ्रातृत्व
आनी	–	राजस्थानी	महारानी	वीरानी

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

जवाहरबाई कर्मवती के द्वारा हुमायूँ को राखी भेजने का विरोध इसलिए कर रही थी, क्योंकि बदशाह हुमायूँ मुसलमान थे।

गहन सोच

राखी मिलने पर हुमायूँ की प्रतिक्रिया थी– सेनापति महारानी कर्मवती ने मेरे लिए सचमुच जादू का पिटारा भेजा है। मेरे सूने आसमान में उन्होंने मुहब्त का चाँद चमकाया है। मुझे बहिन मिल गई है। उन्होंने मुझे भेजकर अपना भाई बनाया है। (दूत से) बहिन कर्मवती से कहना, हुमायूँ तुम्हारे सगे भाई से बढ़कर है। कह देना मेवाड़ की इज़्ज़त आज से मेरी इज़्ज़त है, जाओ।

2. विषय संवर्धन गतिविधि

छात्र/छात्राएँ राणा सांगा के विषय में इंटरनेट से जानकारी प्राप्त करें।

3. रचनात्मक सोच

छात्र/छात्राएँ 'राखी का मोल' विषय पर निबंध लिखकर अपने अध्यापक/अध्यापिका को दिखाएँ।

21. ठेले पर हिमालय

पाठ से

मौखिक

1. (क) लेखक बर्फ को बहुत निकट से देख पाने के लिए कौसानी गए थे।

(ख) सोमेश्वर की घाटी के उत्तर में स्थित पर्वतमाला के शिखर पर कौसानी बसा हुआ है। कौसानी एक छोटा-सा और बिलकुल उजड़ा-सा गाँव है जहाँ बर्फ का तो कहीं नामो-निशान नहीं है।

(ग) खानसामे ने सबको खुशकिस्मत इसलिए कहा क्योंकि उनसे पहले आए टूरिस्ट ने बर्फ नहीं देखा। लेकिन लेखक के वहाँ पहुँचने पर बर्फ दिखने के आसार नज़र आ रहे थे।

(घ) लेखक घाटी में उतरकर मीलों चलकर बैजनाथ पहुँचे, जहाँ गोमती बहती है। गोमती की उज्ज्वल जलराशि में हिमालय की बर्फीली चोटियों की छाया तैर रही थी। हिमालय से मिलने की इच्छा रखकर लेखक उस जल में तैरते हुए हिमालय से जी भरकर भेंट किया।

लिखित

(क) कोसी से बस चली तो रास्ते का सारा दृश्य बदल गया। सुडौल पत्थरों पर कल-कल करती हुई कोसी, किनारे के छोटे-छोटे सुंदर गाँव और हरे मखमली खेत, सोमेश्वर की सुंदर घाटी ने लेखक को आकर्षित किया।

(ख) लेखक जब कौसानी पहुँचे तब वहाँ सामने की घाटी में अपार सौंदर्य बिखरा था। पर्वतमाला ने अपने अंचल में कत्यूर की रंग-बिरंगी घाटी छिपा रखी है। पचासों मील चौड़ी यह घाटी, हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल रास्ते, जिनके किनारे सफेद-सफेद पत्थरों की कतार और इधर-उधर से आकर आपस में उलझ जानेवाली बेलों की लड़ियों-सी नदियों के आकर्षण से लेखक को ऐसा लगा कि वे किसी दूसरे ही लोक में चले आए हैं।

(ग) छोटा-सा बादल के टुकड़े-सा, न सफेद, न रुपहला, न हलका नीला, बल्कि तीनों रंगों का आभास देता हुआ, बाल स्वभाववाला शिखर बादलों की खिड़की से झाँकता बर्फ का टुकड़ा—सबसे पहले बर्फ दिखाई देने का वर्णन लेखक ने कुछ इस प्रकार किया।

(घ) लेखक पान की एक दुकान पर अपने अल्मोड़ावासी मित्र के साथ खड़े थे कि तभी ठेले पर बर्फ की सिलें लादे हुए बर्फवाला आया। ठंडी, चिकनी, चमकती बर्फ से भाप उड़ रही थी। वे क्षणभर उस बर्फ को देखते रहे, उठती हुई भाप में खोए रहे और खोए-खोए से ही बोले, ''यही बर्फ तो हिमालय की शोभा है।'' और तत्काल लेखक के मन में शीर्षक कौंध गया—ठेले पर हिमालय।

(ङ) सूरज डूबने लगा और धीरे-धीरे ग्लेशियरों में पिघला केसर बहने लगा। बर्फ कमल के लाल फूलों में बदले लगी। घाटियाँ गहरी पीली हो गईं। अँधेरा होने लगा तो हम उठे। मुँह-हाथ धोने और चाय पीने लगे। पर सब चुपचाप थे, गुमसुम, जैसे सबका कुछ छिन गया हो, या शायद सबको कुछ ऐसा मिल गया हो जिसे अंदर ही अंदर सहेजने में सब आत्मलीन हों या अपने में डूब गए हों।

(च) 1. 'वह रास्ता' कोसी के रास्ते की ओर संकेत है।

2. रास्ता कष्टप्रद, सूखा और कुरूप इसलिए लगा क्योंकि वहाँ पानी का कहीं नाम-निशान नहीं था, सूखे-भूरे पहाड़ और हरियाली का अभाव था। वहाँ ढालों को काटकर बनाए गए टेढे-मेढ़े रास्ते थे।

(छ) 1. कौसानी एक छोटा-सा, बिलकुल उजड़ा-सा गाँव जहाँ बर्फ का नाम-निशान नहीं था। लेखक वहाँ बर्फ देखने गए थे। परंतु वहाँ बर्फ नहीं दिखने से उन्हें ऐसा लगा जैसे ठग गए।

2. सोमेश्वर की घाटी में बिखरा अपार सौंदर्य जब लेखक ने देखा तो वे स्तब्ध रह गए। वहाँ बेलों की लड़ियों-सी बहने वाली नदियों को देखकर लेखक के मन में यह इच्छा होती है कि उन्हें उठाकर कलाई में लपेट लूँ। उन्हें आँखों से लगा लूँ।

2. (क) 2. (✓) (ख) 3. (✓)

भाषा से

1. सूखे-भूरे = सूखे और भूरे शिव-पार्वती = शिव और पार्वती

चाय-कॉफी	= चाय या कॉफी	स्कूटर-कार	= स्कूटर या कार
पेन-पैंसिल	= पेन या पेंसिल	छोटे-बड़े	= छोटे और बड़े
नदी-नालों	= नदी और नालों	मुँह-हाथ	= मुँह और हाथ

2. छात्र स्वयं करें।
3. छात्र स्वयं करें।

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

ठेले पर हिमालय। खासा दिलचस्प शीर्षक है न। और यकीन कीजिए, इसे बिल्कुल ढूँढ़ना नहीं पडत्र। बैठे-बैठाएँ मिल गया। अभी कल की बात हे, मैं एक पान की दुकान पर अपने अल्मोड़ावासी मित्र के साथ खड़ा था कि तभी इेले पर बर्फ की सिले लादे हुए बर्फवाला आया। ठंडी, चिकनी, चमकती बर्फ से भाप उड़ रही थी। वे क्षणभर उस बर्फ को देखते रहे, उठती हुई भाप में खोए रहे और खोए-खोए से ही बोले, "यती बर्फ तो हिमालय की शोभा है।" और तत्काल शीर्षक मेरे मन में कौंध गया– ठेले पर हिमालय।

गहन सोच

लेखक बस से उतरा सामने देखा कितना अपार सौंदर्य बिखरा था। सामने की घाटी में पर्वतमाला ने अंचल में यह जो कत्यूर की रंग-बिरंगी घाटी छिपा रखी है, इसमं किन्नर और पक्ष ही तो वास करते होंगे। पचासों मील चौड़ी यह घाटी, हरे मखमली कालीनों जैसे खेत सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल रास्ते जिनके किनारे सफेद-सफेद पत्थरों की कतार और इधर-उधर से आकर आपस में उलझ जाने वाली बेलों की लड़ियों-सी नदियाँ। यह देखकर लेखक अकस्मात् दूसरे लोक में चले आए थे।

2. अनुभव आधारित अधिगम

छात्र/छात्राएँ अपना-अपना अनुभव साझा करें।

3. भारत का ज्ञान

छात्र/छात्राएँ इंटरनेट से भारत के प्रसिद्ध पर्वतीय स्थलों की एक सूची बनाएँ।

22. मित्रों का चुनाव

पाठ से

मौखिक

1. (क) मित्र का चुनाव करने से पूर्व उसके आचरण और स्वभाव आदि का विचार और अनुसंधान करना चाहिए।

(ख) प्रस्तुत निबंध के लेखक श्री रामचंद्र शुक्ल हैं।

(ग) मित्र भाई के समान है जिसे हम अपना प्रीति-पात्र बना सकें।

(घ) विश्वासपात्र मित्र को खज़ाना कहा गया है।

(ङ) अच्छी संगति मित्र को सहारा देने वाली बाहु के समान होती है, जो निरंतर उसे उन्नति की ओर ले जाएगी।

लिखित

(क) मित्रों के चुनाव की उपयुक्तता पर मनुष्य के जीवन की सफलता निर्भर होती है क्योंकि संगति का गुप्त प्रभाव हमारे आचरण पर बड़ा भारी पड़ता है।

(ख) ऐसे लोगों का साथ हमारे लिए बुरा है, जो हमसे अधिक दृढ़-संकल्प हैं, क्योंकि हमें उनकी हर बात बिना विरोध के मान लेनी पड़ती है। ऐसे लोगों का साथ इसलिए भी बुरा है क्योंकि ऐसी दशा में न तो हमारे ऊपर कोई नियंत्रण रहता है और न हमारे लिए कोई सहारा रहता है।

(ग) विश्वासपात्र मित्र मिल जाने से आत्मशिक्षा का कार्य बहुत सुगम हो जाता है। जिसे ऐसा मित्र मिल जाए उसे समझना चाहिए कि खज़ाना मिल गया। विश्वासपात्र मित्र जीवन की औषधि है।

(घ) मित्रता के लिए प्रकृति और आचरण की समानता आवश्यक नहीं है। दो भिन्न प्रकृति और स्वभाव के मनुष्यों के बराबर प्रीति और मित्रता रही है। उदाहरण के तौर पर, राम धीर और शांत प्रकृति के पुरुष थे, जबकि लक्ष्मण उग्र और उद्दंड स्वभाव के थे, परंतु दोनों भाइयों में अत्यंत प्रगाढ़ स्नेह था। उनकी मित्रता खूब निभी।

(ङ) कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है। यह केवल नीति और सद्वृत्ति का ही नाश नहीं करता, बल्कि बुद्धि का भी क्षय करता है। किसी युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी तो वह उसके पैरों में बँधी चक्की के समान होगी, जो उसे दिन-रात अवनति के गड्ढे में गिराती जाएगी और यदि अच्छी होगी तो सहारा देने वाली बाहु के समान होगी, जो निरंतर उन्नति की ओर ले जाएगी।

(च) मित्र बनाते समय हमें अपने मित्रों से यह आशा रखनी चाहिए कि वे उत्तम संकल्पों से हमें दृढ़ करेंगे, दोषों और त्रुटियों से हमें बचाएँगे, हमारे सत्य, पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करेंगे, जब हम कुमार्ग पर पैर रखेंगे तब वे हमें सचेत करेंगे, जब हम हतोत्साहित होंगे तब हमें उत्साहित करेंगे।

(छ) सही मित्र का चुनाव नहीं होने से मनुष्य में नीति और सद्वृत्ति का नाश तो होता ही है, साथ में बुद्धि का भी क्षय होता है।

2. छात्र स्वयं करें।

3. (क) (स) (✓) (ख) (स) (✓)
(ग) (स) (✓)

भाषा से

1. (क) अपवित्र (ख) हतोत्साहित
(ग) आशावान (घ) नीतिज्ञ
(ङ) नश्वर

2. (क) योग (✓) (ख) राज (✓)
(ग) नीयत (✓) (घ) अनिल (✓)

रचनात्मक मूल्यांकन

छात्र स्वयं करें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)

1. पाठ्यचर्या एकीकरण

तार्किक सोच

मित्रों का चयन करते समय हमें बहुत-सी बातों का ध्यान रखना चाहिए– मित्र बनाने के पूर्व उसके आचरण और स्वभाव आदि का पता लगा लेना चाहिए, हँसमुख चेहरा, बातचीत का ढंग, थोड़ी चतुराई और ये ही दो-चार बाते किसी में देखकर मित्र बनाना उचित नहीं है। सच्ची मित्रता में उत्तम वैद्य सी निपुणता और परख होती, अच्छी-से-अच्छी माता का सा धैर्य और कोमलता होती है। ऐसी ही मित्रता करने का प्रयत्न व्यक्ति को करना चाहिए।

गहन सोच

गलत व्यक्ति को मित्र बनाने से हमें बहुत तरह से नुकसान हो सकता है, जो बुरे लोगों की संगति में पड़ता है उसकी आध्यात्मिक उन्नति बाधक होती है। ऐसे लोगों को साथी न बनाओ जो, अश्लील, अपवित्र और फूहड़ बातों में हँसाना चाहें। उनसे सावधान रहो। हृदय को उज्ज्वल और निष्कलक रखने का सबसे अच्छा उपाय ही है कि बुरी संगति की छूत से बचो।

2. अनुभव आधारित अधिगम

छात्र/छात्राएँ स्वयं उत्तर दें।

3. रचनात्मक सोच

छात्र/छात्राएँ स्वयं उत्तर दें।